द्वितीय अध्याय

उपन्यास के तत्त्वों के आधारपर 'आधा गाँव' का अनुशीलन

उपन्यास के तत्वों के आधार पर "आधा गाँव" का अनुशीलन

स्वातंत्र्योत्तर युग में "आँचलिक उपन्यास" लेखन की प्रवृति का विकास अत्यन्त तीव्र गति से होकर अनेक सशक्त कृतियाँ सामने आयी हैं । इन कृतियों में अंचल का समग्र चित्रण वास्तविकताके साथ अंकित हुआ है । लोक–जीवन का सम्पूर्ण चित्रण आँचलिक उपन्यास का आधार माना जाता है ।

प्रारम्भिक आँचलिक उपन्यासों का कथाक्षेत्र केवल ग्रामीण जीवन तक सीमित था परंतु आज उसकी सीमा विस्तृत हो गई है । समकालीन समाज जीवन से अलग विशिष्ट जीवन पध्दति रखनेवाले समाज का चित्रण करनेवाले उपन्यासों को "आँचलिक उपन्यास" माना जाता है । विशिष्ट पध्दति से जीवन–यापन करनेवाला समाज उपनगर, नगर या महानगर में भी हो सकता है ।

"आँचलिक उपन्यास" स्वातंत्र्योत्तर युग की देन है परंतु कई एक विद्वान इसके प्रेरणा स्त्रोत के रूप में वैदिक और पौराणिक साहित्य का उल्लेख करते हैं तो कतिपय विद्वान पाश्चात्य साहित्य का अनुकरण मानते हुए हिंदी उपन्यास साहित्य के प्रारम्भ काल के साथ इसको जोडते हैं । उपर्युक्त सभी तर्क एवं मत अनुचित हैं, क्योंकि "आँचलिक उपन्यास" का उद्‌भव स्वातंत्र्योत्तर युगीन परिवेश का प्रभाव एवं परिणाम है । वास्तव में युग की आवश्यकता के रूप में राजनीतिक आजादी के बाद आँचलिक उपन्यास का जन्म हुआ है ।

आधुनिक हिंदी साहित्य के इतिहास में आँचलिक उपन्यास का विशेष महत्व होने के कारण अनेक विद्वानों –समीक्षकों एवं आलोचकोंने इस पर विस्तृत चर्चा की है । कई एक विद्वानों ने उपन्यास के तत्वों के आधार पर आँचलिक उपन्यासों को परखने का प्रयत्न किया है तो कतिपय विद्वान आँचलिकता के अलग मानदण्ड निश्चित कर आँचलिक उपन्यासों का अध्ययन–अनुशीलन करते हैं । प्रस्तुत अध्याय में हमने उपन्यास के परम्परागत शास्त्रीय तत्वों के आधार पर "आधा गाँव" उपन्यास का विवेचन–अनुशीलन करने का प्रयास किया है । वास्तव में इस प्रकार का अनुशीलन करने पर विद्वान रोक लगाते हैं । रोक लगानेवालों का मत है कि

आँचलिक उपन्यास अन्य उपन्यासों से अलग होने के कारण अलग दृष्टि सें अध्ययन होना आवश्यक है । फिर भी हम यहाँ पर परम्परागत तत्वों के आधार पर "आधा गाँव" का अनुशीलन करने का प्रयास कर रहे हैं ।

अनेक विद्वान समीक्षकों ने उपन्यास के प्रमुख तत्वों का विस्तृत विवेचन किया है । दुहरावट और पिष्टपेषण से बचने के हेतु हम संकेत और संक्षिप्त रूप में सैध्दान्तिक विवेचन को प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहे हैं ।—

अ. **उपन्यास के तत्व**

कथानक या कथावस्तु

शरीर में जो स्थान हड्डियों को प्राप्त है, उपन्यास में वही स्थान कथावस्तु का होता है । उपन्यासकार अपने कथानक का चुनाव इतिहास, पुराण या जीवनी, किसी भी क्षेत्र से कर सकता है । परंतु उसके समुचित निर्वाह के लिए लेखक को उस विषय की पूर्ण जानकारी आवश्यक मानी जाती है ।

कथानक की विशेषताओं और गुणों के रूप में रोचकता, संभाव्यता, सुसूत्रता, मौलिकता, यथार्थता, स्वाभाविकता, आदि का उल्लेख किया जाता है ।

कथावस्तु की दृष्टिसे चरित्रप्रधान उपन्यास और घटना प्रधान उपन्यासों का उल्लेख किया जाता है । कई एक विद्वानों ने कथानक के कई एक प्रकार किए हैं जैसे अधिकारिक कथा, प्रासंगिक कथा, गौण कथा, उपकथा आदि ।

उपन्यास का कथानक प्रस्तुत करने की शैलियाँ हैं – वर्णनात्मक, पत्रात्मक, आत्मकथात्मक, दैनन्दिनी (डायरी), मनोवैज्ञानिक अथवा चेतना प्रदाह पध्दति आदि ।

पात्र एवं चरित्र चित्रण

पात्रों का व्यक्तित्व और चरित्र–चित्रण आज के उपन्यासों की प्रमुख विशेषता है । चरित्र–चित्रण के अंतर्गत पात्रों की आंतरिक और बाहय व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला जाता है । प्रत्येक

पात्र साधारण मनुष्य होता है अतः उसमें गुण–दोष, उदारता–अनुदारता, करूणा–क्रूशंसता आदि परस्पर विरोधी मानवीय भावनाएँ होती हैं ।

उपन्यासकार चरित्र–चित्रण के लिए विश्लेषणात्मक या साक्षात् और सांकेतिक या नाटकीय प्रणाली को अपनाता है ।

उपन्यास में दो प्रकार के चरित्र होते हैं इनमें से एक तो किसी विशिष्ट श्रेणी या वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं और दूसरे स्वयं अपने आपका । स्थिर चरित्र और गतिशील चरित्र नामक प्रकारों का कई विद्वानों ने उल्लेख किया है ।

संवाद या कथोपकथन

पात्रों का पारस्परिक वार्तालाप ही संवाद या कथोपकथन है । उपन्यास को सफल, सरस, प्रभावी, गतिशील और सजीव एवं मनोरंजक बनाने के लिए संवादों की अनिवार्यता सिध्द हो गई है । कथोपकथन के आवश्यक गुण हैं – उपयुक्तता, सम्बन्धता, स्वाभाविकता, संक्षिप्तता, सरसता, उद्देश्यपूर्णता आदि ।

देश काल तथा वातावरण

उपन्यासों में स्वाभाविकता एवं सजीवता का समावेश करने के लिए यह अनिवार्य है कि उसमें देश काल तथा वातावरण का समावेश हो । उपन्यास का प्रत्येक पात्र विशिष्ट देश, समय और वातावरण में होता है । देश, काल तथा वातावरण के अंतर्गत आचार–विचार , रीतिरिवाज, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, परिस्थितियों का वर्णन आ जाता है ।

ऐतिहासिक, सामाजिक और आँचलिक उपन्यासों में देश, काल तथा वातावरण का विशेष महत्व होता है ।

भाषा और शैली

उपन्यास की भाषा प्रसाद और माधुर्य गुणों से युक्त होनी चाहिए । विषय और परिस्थिति के अनुकूल उसमें ओज का भी समावेश हो सकता है । पात्रानुकूल और प्रसंगानुकूल भाषा का प्रयोग होना चाहिए ।

कई एक विद्वान शैली को कथानक के साथ जोडकर देखते हैं तो कई अलग से देखते हैं । उपन्यासकार वर्णनात्मक, आत्मकथात्मक, पत्रात्मक, डायरी शैली आदि का प्रयोग करता है । शैली में रोचकता, सरलता, प्रवाहपूर्णता का होना आवश्यक माना जाता है ।

उद्‌दैश्य

उपन्यास का उद्‌दैश्य मनोरंजन, मतवाद या सिध्दान्त काप्रचार, जीने की कला सीखाना, उद्‌बोधन, ज्ञान क्षितिज का विस्तार करना, जीवन में अन्तर्निहित सत्य का अन्वेषण करना, मानवीय मूल्यों का विकास करना आदि माना जाता है ।

शीर्षक

शीर्षक उपन्यास का दर्पण है । उपन्यास के विषय और उद्‌दैश्य की प्रतिच्छाया उसके शीर्षक में होनी चाहिए । शीर्षक की विशेषता है – संक्षिप्तता, आकर्षकता, नवीनता विषयानुकूलता, बोधगम्यता, कलात्मकता, व्यंजकता, आदि

(आ) "आधा गाँव" तात्विक विवेचन

कथानक

आँचलिक उपन्यासों का कथानक अंचल विशेष के सम्पूर्ण जीवन से सम्बन्धित होता है । विशेष अंचल का पिछडापन और अविकसित रूप अपनी सभी विशेषताओं के साथ इन कृतियों के द्वारा हमारे सामने आता है ।

आँचलिक उपन्यास के कथानक का स्वरूप मनोवैज्ञानिक, ऐतिहासिक, चरित्र– प्रधान और घटना प्रधान उपन्यासों से अलग होता है । उपन्यासकार अँचल को नायक मानकर उसके विविध पक्षों को उद्‌घाटित करता है । उसकी दृष्टि का केन्द्र बिन्दु अंचल का समग्र जीवन होने के कारण अधिकारिक कथा, प्रासंगिक कथा, गौण कथा या उपकथा आदि प्रकारों की अनदेखी कर वह कथानक का ताना–बाना बुनता है । वह अंचल को विविध कोणों से देखकर सजीव पात्रों के द्वारा तटस्थ दृष्टि से अंकित करता है । वह केन्द्रीय कथा की ओर विशेष ध्यान न देकर समग्र चित्रण को महत्व देता है । परिणामतः कथानक में बिखराव, विविधता तथा यथार्थता का समावेश होता है । उपर्युक्त सभी विशेषताओं को समेटती हुई डॉ. सुषमा प्रियदर्शनी लिखती हैं – "इन उपन्यासों में कथागत बिखराव का आभास होता है । समग्रता को समंजित करने, अपने पक्षों को बाँधने, कोणवैविध्य के समवाय, अनेक जीवन–स्तरों को एकसाथ रखने, समाज और व्यक्तिचेतना के सूत्रों को संगठित करने के बहुमुखी प्रयत्नों में विछिन्नता का प्रतिभास स्वाभाविक ही है । यहाँ बाहय संगठन देखने की चेष्टा न्यायोचित नहीं है, क्योंकि इनका संगठन आंतरिक ही हो सकता है ।"(1)

उपर्युक्त विशेषताओं के आधार पर "आधा गाँव" का अनुशीलन करने का हमारा प्रयास है ।

1. "आधा गाँव" का कथानक

राहीजी ने इस उपन्यास में दस परिवारों को गाजीपूर के गंगौली नामक वास्तविक गाँव की पृष्ठभूमि में प्रस्तुत किया है । यह उत्तरप्रदेश के गाजीपुर जिले का मशहूर और बड़ा गाँव है, जिसमें हिन्दू और मुसलमानों की अनेक जातियाँ रहती हैं । परन्तु लेखक ने इस उपन्यास में केवल शीआ मुसलमानों के जीवन को चित्रित किया है । आवश्यकतानुसार अन्य जातियों एवं संप्रदायों का उल्लेख मात्र किया है । इसीलिए लेखक ने अपने उपन्यास को "आधा गाँव" कहना उचित समझा है ।

राहीजी ने इस उपन्यास में सन् 1937 ई. से 1952 ई. तक के पन्द्रह वर्षों की अवधि में होनेवाली घटनाओं और उनके गंगौली के शीआ मुसलमानों पर होनेवाले प्रभावों को बताने का प्रयास किया है । यह काल वर्तमान भारत के इतिहास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण काल है । इसी काल में सन् 1937 ई.मे प्रांतीय विधानसभाओं के लिए पहलीबार चुनाव हुए और प्रांतों में भारतीय सरकारों का प्रथमबार निर्माण हुआ । सन् 1942 ई.में "भारत छोडो" प्रस्ताव पारित हुआ । जिसके परिणामस्वरूप देशभर में क्रांति का प्रभावशाली कांड प्रस्तुत हुआ और ब्रिटिश सरकार का क्रूर अत्याचारी रूप भी सामने आया । सन् 16 अगस्त, 1946 ई. में मुस्लिन लीग की "डायरेक्ट एक्शन" की घोषणा हुई जिससे देशभर में हिंदू –मुस्लिम दंगे शुरू हो गये । सन् 1947 ई. में भारत का बँटवारा होकर पाकिस्तान का निर्माण हुआ । सन् 1950 ई.में भारत में नये संविधान की स्थापना हुई । सन् 1952 ई.के प्रारंभ में आम चुनाव हुए जिससे देश में जनतंत्र की एक लहर पैदा हो गई । इन परिवर्तनों का गंगौली के शीआ मुसलमानों पर क्या प्रभाव हुआ और उनके जीवन में कैसे परिवर्तन आये इसी को राहीजीने इस उपन्यास में प्रस्तुत किया है ।

प्रस्तुत उपन्यास में उपर्युक्त घटनाओं में से लगभग सभी घटनाओं के उल्लेख मिलते हैं । कुछ घटनाओं को विशेष रूप से कथा में नियोजित किया गया है । जैसे पाकिस्तान के प्रस्ताव को गंगौली के शीआ मुसलमानों के समक्ष अलीगढ के विद्यार्थियोंद्वारा रखा जाना है । द्वितीय विश्वयुध्द का भी उल्लेख है । जिसे सिपाहियों की भर्ती के लिए खोले गए अनेक केंद्रों की चर्चा से बताया है । इस समय गंगौली के अनेक नवजवानों को फौज में शामिल होते हुए दिखाया गया

है । आजादी की संभावना के साथ हिन्दू–मुस्लिम दंगे शुरु होकर खुले आम मार–काट शुरू हो जाती है । जिसके अनेक उल्लेख उपन्यास में उपलब्ध होते हैं । सन 14अगस्त, 1947 ई. को पाकिस्तान के निर्माण की घोषणा भयंकर मार–काट को जन्म देती है । गंगौली के कुछ शीआ मुसलमानों के यकीन को पाकिस्तान के निर्माण की घोषणाने खत्म कर, हिन्दुस्तान के प्रति शक पैदा कर दिया था । जमींदारी उन्मूलन कानून ने छोटे–मोटे शीआ जमींदारों को घर से बेघर कर दिया था । इसतरह द्विधा मन:स्थिति में पडे हुए गंगौली के शीआ मुसलमानों का चित्रण इस उपन्यास में हुआ है, पन्द्रह वर्षो की अवधि में घटित घटनाओं के परिणाम से उत्पन्न स्थिति का उल्लेख करते हुए लेखक कहते हैं – "यह कहानी है समय ही की"(2) जिसे काल्पनिक इतिहास की संज्ञा नहीं दी जा सकती ।

"ऊँघता शहर" नामक प्रथम अध्याय में लेखक ने प्रस्तावना स्वरुप अनेक संकेत दिए हैं जिनसे उपन्यास की रचनापर प्रकाश पडता है । "मैं गाजीपुर की तलाश में निकला हूँ लेकिन पहले मैं अपनी गंगौली में ठहरुँगा । अगर गंगौली की हकीकत पकड में आ गई तो मैं गाजीपुर का "एपिक" लिखने का साहस करुँगा ।"(3) इसके अलावा लेखक पाठकों को सचेत करते हुए कहते हैं कि – "यह कहानी न कुछ लोगों की है और न कुछ परिवारों की । यह उस गाँव की कहानी भी नहीं है जिसमें इस कहानी के भले–बुरे पात्र अपने को पूर्ण बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं । यह कहानी न धार्मिक है न राजनोतिक । क्योंकि समय न धार्मिक होता है न राजनीतिक । .....और यह कहानी है समय ही की । यह गंगौली में गुजरनेवाले समय की कहानी है ।(4) इस शहर से लेखक का नाता है परन्तु लेखक की पकड में इसकी सम्पूर्ण वास्तविकता नहीं आई है,इसलिए वह "मेरा गाँव, मेरे लोग" की तलाश में निकला है । वह जो कहानी ढूँढ रहा है , वह जितनी सच्ची है उतनी ही काल्पनिक भी । क्योंकि यह आपबीती भी है और जगबीती भी –"यह उम्रों के हेर–फेर में फँसे हुऐ सपनों और हौसलों की कहानी है । यह कहानी है उन खंडहरों की जहाँ कभी मकान थें औरयह कहानी है उन मकानों की जो खंडहरों पर बनाये गये हैं ।"(5)

इसके बाद राही का सफर "उद्‌गम" की ओर बढता है "उद्‌गम" अध्याय में राहीजी ने झंगटिया–बो, नज्जन, उसकी बीवी गफूरन उनकी बेटियाँ दिलआरा और सितारा आदि की कहानियों

के साथ मुस्लिम जमींदारों की शान, भेदा-भेद, उत्तर और दक्खिन पट्टीवालों में मोहर्रम को लेकर होनेवाले झगडों को दर्शाया है ।

"मियाँ लोग" अध्याय के अंतर्गत शुरु में ही हकीमसाहब का चरित्र-चित्रण शुरू होता है । उनके स्वभावगुणों के साथ मोहर्रम पर पढे जानेवाले नौहे, मातम तथा ताबूतों का वर्णन है साथ ही मोहर्रम को लेकर लोगों में फैली अंधश्रध्दा एवं थानेदारों के भ्रष्टाचार की समस्या को दिखाया है । आगे चलकर फुन्ननमियाँ के चरित्र की शुरुआत होती है । इस अध्याय में अँग्रेजों की स्थिति को भी दिखाया है ।

"ताना बाना" अध्याय में थानेदार ठाकुर हरनारायणप्रसाद ने फुन्ननमियाँ के साथ-साथ दक्खिन पट्टी के कई लोगों को दी हुई सजा ओर इस खुशी में गुलाबीजान को बुलाकर जश्न मनाने की कहानी है । इसी अध्याय में चंदाबाई भी आती है । चंदाबाई और गुलाबीजान दोनों की बिल्कुल नहीं पटती । यहाँपर जमींदारों में तवायफों की नथ उतारने की प्रथा को बताया है, जो जमींदारों की शान समझी जाती है । हिंदू-मुस्लिम के भेद को भी बताया है जो छूत-अछूत का बडा खयाल रखते हैं । आगे चलकर चिरौंजी ओर गुलाम हुसैन खाँ की लडाई का वर्णन किया है।

"नमक" अध्याय में सुलैमान मिया और उनकी बेटी बछनिया का वर्णन हैं । साथ ही मौलवी बेदार का वर्णन है जो अकेले रहते हैं । बूढापे में वे बछनिया से विवाह करना चाहते हैं । इस उदाहरण से अनमेल विवाह को लेखक ने दर्शाया है । बछनिया की जात विवाह में बाधा बन जाती है । बछनिया के घरवालें भी उसकी इच्छा के विरोध में मौलवी बेदार से शादी पक्की करते हैं परन्तु वह गर्भावस्थामें अपने प्रेमी सफिल्ला के साथ भाग जाती है ।

आगे चलकर तन्नू फौज में भरती होता हैं साथ ही उम्मुल हबीबा के चित्रणद्वारा विधवा समस्या को दर्शाया है । "नमक" अध्याय में ही गोबरधन के व्यक्तित्व को परिचित कराते हुए दरोगा की रिश्वतखोरी और "वारफंड" की स्थिति को दिखाया है । बीच-बीच में मोहर्रम का वर्णन और वहाँ के लोगों की रहन-सहन पोशाक के बारे में चर्चा की है । सामाजिक स्थिति को दर्शाते

हुए सकीना और फुस्सू मियाँ के उदाहरणद्वारा गाँवो में प्रचलित अंधविश्वासों को दिखाया है जो बार-बार लडकियाँ पैदा होने पर लडके के लिए मन्नतें माँगते हैं । पाकिस्तान निर्मिति के साथ जुडे हुए विचारों और अंधःविश्वासों का चित्रण इस अध्याय में है । चुनाव के बाद चमार, भंगियों का रूतबा बढ़ाकर काँग्रेस पक्ष थोडा बहुत भेदभाव कम करने का प्रयत्न करता है । बदरून और मुईनुद्दीन के विवाह के वर्णन से वहाँ का सांस्कृतिक जीवन हमारे सामने आता है जिसमें शादी-ब्याह में गाये जानेवालें गीत हैं ।इस अध्याय में रजिये की मृत्यु हो जाती है उससमय दफनविधि के लिए मुस्लिमों से पहले हिंदू ही आते हैं । यहाँपर हिंदू-मुस्लिम एकता का वर्णन है

"गाथा" अध्याय में मोहर्रम के खत्म हो जाने के बाद छायी जानेवाली उदासी का वर्णन किया है । इसमें झिंगुरिया को फाँसी हो जाने के बात के साथ इमाम साहब की जातिवादी मानसिकता का वर्णन है । साधारण जनता की पाकिस्तान सम्बन्धी धारणा और भ्रम को इस अध्याय में रेखांकित कर मिगदाद की चरित्रिक विशेषताओं को प्रकाशित किया है । भाषा समस्या को उठाकर "हिंदी-उर्दू" की एकता स्पष्ट की है । शीआ-सुन्नी में वैवाहिक सम्बन्ध निर्माण न होने के कारणों के रूप में शीआ मुसलमानों की धारणा स्पष्ट की है । शीआ मुसलमानों का कहना है कि सुन्नी लडकी शीआ के घर में बहू बनकर भी मोहर्रम का शोक नहीं मानेगी । इस अध्याय के अंत में मिगदाद -सैफुनिया की प्रेम कहानी चित्रित है ।

"प्यास" अध्याय में तन्नू मेजर हसन बनकर घर वापस लौटता है । बहुत दिनों के पश्चात् घर आनेपर वह अपने गाँव के बारे में जानकारी हासील करता है । यहाँ गाँव में घटित घटनाओं को संक्षिप्त रूप से बताया गया है । गाँव के लोग भी तन्नू से युध्द की जानकारी प्राप्त करते हैं । लेखक ने तन्नू की कहानी के द्वारा युध्द की समस्या का परिचय दिया है । हम्माद मियाँ द्वारा भाषा समस्या और सईदाद्वारा हिंदी के प्रचार-प्रसार की कहानी बतायी है।इसमें तन्नू और सईदा के प्रेम का उल्लेख है । सईदा पढ़ी लिखी है और नौकरी भी करती है।यहाँपर लडकियों की तरक्की दिखाई है । इनकेद्वारा अँग्रेजी भाषा के प्रभाव भी को दिखाया है। गाँव में कमालुद्दीन डॉक्टर भी आया है । कमालुद्दीनद्वारा लाई नयी इलाज पध्दति की ओर आकर्षित लोग दिखाई देते हैं । कमालुद्दीन गाँव में बदलाव लाना चाहता है इसलिए वह गाँव के राकी एवं जुला हो

के बच्चों को पढ़ाता है । वह भेदाभेद को नष्ट करने का प्रयास करता है । गाँव के लोगों को पाकिस्तान कहाँ बन जायेगा यह चिंता त्रस्त करती है । सईदा को चाहनेवाले तन्नू को जातिवाद के प्रतिबंधों के कारण मगफिये को घरवाली बनाना पडता है । उपन्यास में तन्नू ओर सईदा के खतों के द्वारा कथानक में गति लाई है । हिन्दू मुसलमानों के दंगे–फसाद में मुसलमानों को ही हमेशा सजा क्यों दी जाती है इस प्रकार का प्रश्न लेखक ने उठाया है । जिन्नासाहब के बारे में लोगों के मतों को उल्लेखित कर पाकिस्तान के बारे में फैले बुरे और गलत विचारों को यहाँपर प्रस्तुत किया है ।

"तनहाई" इस अध्याय में जमींदारी उन्मूलन के बाद उत्पन्न स्थिति और जमींदारों की मानसिकता का वर्णन है । साथ ही उनके टूटे मकानों को भी दिखाया है जो पहले शान से रहते थें । मन्नो के माध्यम से पढ़ाई में रूचि रखनेवाली युवा–पीढी को चित्रित किया है । परूसराम जैसा अछूत भी (एम.एल.ए.) बनकर जमींदारों के सामने शान से कुर्सीपर बैठता है यहाँपर अछूतों में हुए प्रगति और परिवर्तन का चित्रण है । हकीमसाहब का बेटा सद्दन जो पाकिस्तान चला गया है । वहाँ जानेपर वह अपने घर को बिल्कुल भूल जाता है । जब मोहर्रम आता है तब उसे अपने घर की याद आती है । वह हिन्दुस्तान आकर आपने गाँव की सैर करता है । उसे अपने गाँव में बहुत से बदलाव नजर आते हैं । मिट्टी के तेल के चिरागों की जगह लालटेनें जलती हुई दिखायी देती है । वह देखता है गलियाँ बडी हो गई हैं । कच्चे मकान गिरकर पक्के मकान बन गये हैं । उपन्यासकारने जमींदारों में पाई जानेवाली ऋण की समस्या को दिखाया है । जमींदार अपनी शान के लिए और खोकले दम्भ को बनाये रखने के लिए ऋण लेकर अपना शौक पूरे करते हैं ।

"नयी–पुरानी रेखाएँ" अध्याय में लेखक ने जमींदारों के रहने के ढंग में आये बदलाव का वर्णन किया है । रोजी–रोटी कमाने के लिए फुस्सू मियाँ एक जूते की दूकान खोलते हैं और अब्बूमियाँ अपना मरदाना मकान कम्मो को किराए पर देते हैं । कम्मो अपना अस्पताल वहाँ खुलवाता है । कम्मो जो हरामी औलाद है उसके हाथ के नीचे दो सैयदजादे आदमी पूडियाँ बांधते थक जाते हैं । फुस्सू मियाँ झट से पैसेवाले बनने के ख्वाँब देखते हैं और "शमा–मुअम्मा" हल करते हुए इस आशा में जीते हैं कि एक दिन वह जरूर अमीर बनेंगे । आर्थिक स्थिति बिकट होने पर भी हम्माद–मियाँ पुराने वैभव-रोब को बनाये रखने के हेतु से परूसराम और उसकी पत्नी

को पलंगपर बैठने से टोकते हैं, तब परूसराम की पत्नी कुबरा को खरी-खरी सुनाती हुई कहती है कि, "अब तक आप लोगों का दिमाग ठिक नहीं हो गया है ।" इलेक्शन सरपर होने के कारण दूसरे दिन परूसराम कुबरा और हम्मादमियाँ की माफी माँग लेता है । उसके माफी माँगने से हम्मादमियाँ जिस काम में हाथ डालते वह पूरा नहीं हो जाता इसीवजह से हम्मादमियाँ वापस घर आकर अपनी पत्नी को डाँटते हैं । यहाँपर पीढियों से चले आये छुआछूत भेद को स्पष्ट कर परूसराम के विचारों द्वारा स्पष्ट किया है कि पाकिस्तान बन जाने से मुसलमानों की स्थिति हिन्दुस्तान में कितनी नाजूक हो गई है । इन्ही बातोंका फायदा जनसंघ और महासभावाले उठाते हैं । स्वार्थी नेतागणों के कारण हिन्दू-मुस्लिमों में झगडे पैदा हो जाते हैं ।

हम्मादमियाँ शहर के एक दूकानदार परूसराम पर मुकदमा कायम कर देते हैं उस समय ऊँची जाति के लोग हम्मादमियाँ का साथ देते हैं और छोटी जाति के लोग परूसराम का साथ देते हैं । अनेक खेत कटते हैं, फौजदारियाँ होती हैं अंत में परूसराम को सजा हो जाती है । इस अध्याय में फुन्ननमियाँ और छिकुरिया की मौत का वर्णन है । उपन्यास के अंत में हकीमसाहब का करुण अंत दिखाया गया है और सैयद घराने में फिर से एक लडका पैदा हो जाने की खबर दी है । लेखक यहाँपर लडके के पैदा होने पर यह बताना चाहते हैं कि हकीमसाहब जैसे रूढ़ी-परम्परा का पालन करनेवाले, छुआछूत को माननेवाले अंत तक दूसरों से ईलाज करवाना नहीं चाहते । वे टूटते हैं मगर नहीं झुकते हैं । उनका अंत होता है तो नयी पौध का जन्म होता है । "आधा गाँव" का कथानक अन्य उपन्यासों के कथानक से अलग दिखाई देता है । इसके कथानक में गंगौली की समग्रता, विविधता, वस्तुनिष्ठता देखने को मिलती है । इसका परिवेश जटिल और यथार्थ है । इसमें प्रकृति दृष्यों और भौगोलिक परिस्थिति का वर्णन नहीं है । लेखक ने यहाँपर किसी एक ही पात्र को नायक न मानकर पूरे अंचल को नायक के रूप में प्रस्तुत किया है । उनका उद्देश्य सिर्फ गंगौली के लोगों को चित्रित करना ही है । इस उपन्यास में अनेक पात्र आये हैं जिनकी मनःस्थितियों, परिस्थितियों संभाषणोंद्वारा उनके जीवन के हर पहलुओं का चित्रण हमें मिलता है ।

लेखकजी ने इस उपन्यास में तत्कालीन राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक स्थितियों का चित्रण निष्पक्ष भाव से किया है । गंगौली के लोगों के आपसी संबध, उनमें

होनेवाली विविधता, मतभेद, नई–पुरानी मर्यादाओं के टकराव को डॉ. राहीजीने स्पष्ट किया है । वातावरण निर्मिति के लिए उपन्यासकारने लोकगीतों, लोककथाओं और लोकभाषा का प्रयोग किया है। ।

लेखक ने अपने अनुभवों और भोगी हुई जिंदगी को कथा का आधार बनाया है जिन परिवारों की यह कहानी है लेखक स्वयं उन परिवारों में से एक परिवारों का सदस्य है । वह स्वयं अपने अनुभवों को सुना रहा है । अपने आसपास के लोगों का चित्रण कर रहा है परिणामस्वरुप यह रचना सफल एवं यथार्थ बन गई है । कथावस्तु में रोचकता, जिज्ञासा, सजीवता के लक्षण उपलब्ध होते हैं । पाठक नये विषय से परिचित होता है ।

2. पात्र – एवं चरित्र – चित्रण

आंचलिक उपन्यासों में पात्रों का चरित्र–चित्रण नवीन रूप में किया जाता है । इन उपन्यासों के पात्र अन्य उपन्यासों की तरह ही सामान्य जीवन से लिए जाते हैं । डॉ. रामदरश मिश्र ने इस सम्बन्ध में लिखा है –"अंचल की विविधता को रूप देने के लिए लेखक कभी इस कोणपर खडा होता है कभी उस कोणपर , कभी ऊँचाई पर, कभी नीचाई पर । इसमें अनेक पात्रों की आवश्यकता रहती है । हर पात्र का स्थान महत्वपूर्ण होता है । इसमें से कोई पात्र एक दूसरे के निमित्त नहीं होता, वे सब अंचल के निमित्य होते हैं ।"(6) इन उपन्यासों में अंचल की अनेक विशेषताओं को दिखाने के लिए ही पात्रों का समावेश किया जाता है । पात्रों के व्यक्तित्व से उस आँचलिक जीवन के वर्णन में सहायता मिलती है । डॉ. सुषमा प्रियदर्शिनी ने आँचलिक उपन्यास के पात्रों के सम्बन्ध में लिखा है –"आँचलिक उपन्यास के पात्रों के रूपाकार में स्थानीय विशेषता और बहिरंग में स्थानीय वेशभूषा अनिवार्यतः परिलक्षित होती है । इन पात्रों में अंचल का अंतरंग और बाहय जीवित रूपाकार को चित्रित किया जाता है । इसिलिए वे यथार्थ होते हैं । वे केवल प्रतिनिधित्व ही नहीं करते, तो उसे गति भी प्रदान करते हैं ।"(7) स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी के आँचलिक उपन्यासों में जिन पात्रों का वर्णन किया जाता है वे समाज के सभी वर्गों से सम्बन्धित होते हैं ।

राहीजी के "आधा गाँव" उपन्यास में अन्य आँचलिक उपन्यासों की तरह पात्रों की संख्या अधिक हैं ।"आधा गाँव" के अधिकांश पात्र मुसलमान जमींदार हैं । इनके स्वभाव की चर्चा

राहीजी ने इसप्रकार की है – "तमाम छोटे जमींदार गिरोहबन्द थें । रात को डाके डलवाते थें और दिन को मुकदमे लडवाते थें । कभी इसे बेदखल किया कभी उसे दखल दिलवा दिया । इसी हेर–फेर में सौ–पचास खरे हो जाते थें ।"(8) जब छोटे जमींदार ही इतने बीहड थे तो हम उस समय के बडे जमींदार का अंदाजा लगा सकते हैं । सारे छोटे--बडे जमींदार अपनी शान–शौकत के लिए कुछ भी करवा सकते हैं । अगर कोई बात उनके शान के खिलाफ हो गयी तो ये जमींदार कुछ भी करने को तैयार होते हैं ।

"आधा गाँव" में स्त्री पात्रों में मेहरूनिया, सैफुनिया, जमुईद, गुलबहरी, बछनिया, कुलसुम, गुलाबीजान, झंगटियाबो,बोसईदा, रब्बन बी, नईमा बी आदि अनेक है तो पुरूष पात्रों में हम्मादमियाँ, फुन्ननमियाँ, मंजूरमिया, सुलैमान चाचा, गोरे दा, मश्शूभाई , हकीम अली, अब्बू दा, बच्चा, शब्बर, गुज्जन, फुस्सू, मिगदाद, कमालुद्दीन, सद्दन, तन्नू मेजर आदि नाम लिए जा सकते हैं । आँचलिक उपन्यासों मे अंचल ही एक प्रमुख पात्र होने के कारण उपन्यास के अनेक पात्रों में से किसी एक पात्र को चुनना कठिन काम है । फिर भी हम यहाँपर हकीमसाहब , फुन्ननमियाँ और मिगदाद जैसे पात्रों का चित्रण प्रस्तुत करेंगे । इन पात्रों का पाठकोंपर विशिष्ट प्रभाव दिखाई देता है । पात्रों की भीड में से वे पाठकों के हृदयपर छा जाते हैं और अपना अलग अस्तित्व दिखाते हैं । साथ ही इस उपन्यास में जो स्त्री पात्र आये हैं वे कथानक के सहाय्यक रुप में आये हैं । स्त्री पात्रों में हम सईदा, झंगटिया–बो, कुलसूम, और उम्मुलहबीबा का चरित्र देखेंगे –

1. फुन्ननमियाँ

"फुन्ननमियाँ एक मामुली से जमींदार थे । वे इतने मामूली जमींदार थे कि पाजामा नहीं पहनते थे, लुंगी बाँधते थें – वह भी सिली हुई लुंगी नहीं बल्कि कसाइयों की तरह फेटेंदार लुंगी।"(9) वे अनपढ, अशिक्षित, और अक्खड स्वभाव के थें । उनका कसा हुआ बलदंड शरीर था और जमींदारी शान थी जो अपनी बहादुरी और हिम्मत के लिए दिखाई देते हैं। वे मुस्लमानी रूढियों और परम्पराओं तथा रीतिरिवाजों का आदर करते थैं । उन्हें जुआ खेलने का भी बडा शौक था साथ ही उनके स्वभाव में अहं की भावना काफी मात्रा में थी । फुन्ननमियाँ का पहनावा मुस्लिम रूढी परम्परा के अनुसार होते हुए भी आर्थिक स्थिति पर निर्भर दिखाई देता है ।

जुआं खेलना जमींदारों की प्रतिष्ठा का मानदंड समझा जाता हैं । फुन्ननमियाँ अर्थाभाव का सामना करते हैं । मगर जुआ खेलना नहीं छोडते । उनका चित्रण इसप्रकार किया है –

अ. अक्खड स्वभाव

फुन्ननमियाँ एक बार कोई बात मन में ठान ले तो उसे पूरा किए बिना चैन से नहीं बैठते । उनके पडोसी करामतअली खाँ ताजपुर से कुलसूम को ब्याह लाए थे । यह कुलसूम बहुत ही खुबसूरत थी । एक दिन फुन्ननमियाँ ने उसे देख लिया और उसे देखते ही वह उस पर आशिक हो गये । जब हकीम साहब के छोटे भाई की बरात के लिए सभी लोग गये थें तब चारों तरफ सन्नाटा देखकर फुन्ननमियाँ करामत अली की दीवार पर गये और कुलसूम को जबरदस्ती उठा लाए । बरात की वापसी के बाद बडा हंगामा हुआ, फौजदारी हुई ओर फुन्ननमियाँ गिरफ्तार हुए । उन्हें सजा हो गई । वह जेल काट आये मगर मुकदमे के बीच में ही उनकी मरदानगी ने कुलसूम का दिल जीत लिया और वह इन्ही के घर में रहने लगी । उसकी गोद में करामतअली की एक बच्ची थी । फिर धीरे–धीरे करामतअली इसके आदी हो गये और फुन्ननमियाँ रोज उन्हीं के घर जाकर हुक्का पीने लगे । बाद में कुलसूम फुन्ननमियाँ के यहाँ रहने लगी और उनके दस–बच्चों–बच्चियों की माँ बन गई । इस घटना से गाँव के सभी लोग परिचित थे और फुन्ननमियाँ से डरते थे/उनपर हाथ डालने से डरते थे ।

ब. रूढ़ी–परम्परा का पालनकरनेवाले

फुन्ननमियाँ रूढी–परम्परा का पालन करनेवाले थे । वे हमेशा सोजख्वाँनी की परम्परा का खयाल रखते थें । अपने हाथों में कोई न कोई मरसिया जरूर रखतें – चाहे वह मरसिया पढ़ रहे हो, चाहे न पढ़ रहे हो, सोजख्वानी की परम्परा ने ही उन्हें आवाज के उतार–चढ़ाव और ताल से परिचित कर दिया था । वे कोई संगीतज्ञ नहीं थे । कुल मिलाकर कितने सूर होते हैं यह भी उन्हें मालूम नहीं था । वे अलिफ के नाम बे नहीं जानते थे । मगर सारे मरसिये उन्हें जबानी याद थे । फुन्ननमियाँ हमेशा इल्म से ज्यादा परम्परा को मानते थे इसीकारण उन्होने भरी महफिल में तवायफ चंदाबाई को टोक दिया था ।

क. अनूठा मित्रप्रेम

फुन्ननमियाँ और ठाकुर कुंवरपालसिंह दोनों एक ही बाबा के शागिर्द थें और दोनों ही खलिफा के चहेते थें । एक प्रसंग में उन्होंने ठाकुर कुंवरपालसिंह का साथ देकर अपनी मित्रता को स्पष्ट किया । एक बार ठाकुर के साथ उनकी आधी रात के समय गाँव के बाहर लड़ाई हुई । दोनों ही लाठी चलाना अच्छी तरह से जानते थे । "या अली" कहकर फुन्नन मियाँ ने वार किया । फुन्ननमियाँ ने ठाकुर साहब को लाठियोंपर रख लिया । ठाकुरसाहब लडखडाए और गिर पडे । कुँवरपालसिंह के बैल उनके जख्मों को चाट रहे थे । खुद फुन्ननमियाँ के जिस्म पर भी कई जख्म थे और बायाँ हाथ तो बिल्कुल ही बेकार हो गया था । लेकिन वह ठाकुर के जख्म साफ करने लगे । फुन्ननमियाँ ने उन्हें बड़ी मुश्किल से गाड़ी पर रखा । फिर वह खुद भी बैठे गये । गाडी गाँव की तरफ मुडी और फिर दोनों बेहोश हो गए । गाडी जब गाँव में पहुँची तब दोनों को इस हाल में देखकर थाने में रपट लिखवा दी गई । जब दोनों होश में आ गए तब ठाकुर साहब ने फुन्ननमियाँ के विरोध में कोई बयान नहीं दिया बल्कि यह कह दिया कि गुलबहरी को लेकर जाते समय चार--छः लोगों ने हमपर हमला किया और फुन्ननमियाँ ने हमें बचाया । बयान देकर ठाकुरसाहब ने अंतिम साँस ले ली । उस समय फुन्ननमियाँ की आँखें भीग गई । वह बच्चों की तरह बिलख –बिलखकर रोने लगा । दोनों की दोस्ती पूरे गाँव में प्रसिध्द थी ।

ड. स्वाभिमानी

फुन्ननमियाँ के दो लडके इम्तियाज और मुमताज तथा तीन लडकियाँ रजिये, रूकय्ये और और मगफिये थीं । रजिये ओर रूकय्ये की शादी हो चुकी थी । छोटा लडका अभी छोटा था और बडा लडका लडाई में बहादुरी से लडता हुआ शहीद हो गया था । वे अपने बेटे की मौत कबुल न कर हररोज नमाज में वे यही दूवाएँ माँगते थे कि मगफिये की शादी करा दें ओर इम्तियाज को खैरियत से वापस कर दे ।

इस प्रसंग से उनका स्वाभिमानी व्यक्तित्व दिखाई देता है – जब वे करामतअली की बीवी को निकाल लाए थे तब वह बिरादरी से बाहर नहीं किए गए थे, लेकिन जब एक हक की बात पर पृथ्वीपालसिंह का साथ दिया तो पट्टीवालों ने उन्हें टाट–बाहर कर दिया । उनका

हुक्का–पानी बंद कर दिया ऐसे समय उनकी लडकी रजिये की मृत्यु हो गयी पर वे किसी के सामने गिडगिडाने या माँफी माँगने नहीं गए तो अपने हिन्दू और मुसलमान दोस्तों को साथ लेकर उसे दफन कर आए । ऐसे दु:खद प्रसंगपर भी कोई उनकी मदद के लिए नहीं आया । वे स्वयं कबर में उतरकर मृत बेटी से कहते हैं – "ए बेटी, हम का करें । हम्मे तरकीन पढ़ना आता.... बाकी हम गवाही दे रहे हैं की तूँ मुहब्बे एहले बैत रहियो नमाजी रहियो और मियाँ की खिदमतगार रहियो !"(10)

यह प्रसंग हृदय हिलानेवाला बन गया है । कितनी भी मुसीबतें आनेपर वे अपना स्वाभिमान नहीं छोडतें ।

इ.. **भावुक**

ऊपर से कठोर दिखाई देनेवाले फुन्ननमियाँ भावुक भी थे । उनका व्यक्तित्व धीरे–धीरे अंदर से टूटता चला जा रहा था । अपनी रोजी–रोटी चलाने के लिए उन्होंने परसराम का साथ देना शुरू कर दिया था । ऊपर से वे बहुत ही कठोर थें पर भीतर से कोमल थें । जब कासीमाबाद के थानेपर शहीद लोगों की समाधि बन रही थी तब वे बहुत ही खुश थें । इस दिन के लिए उन्होंने पाजामा भी सिलवा लिया था । बन सँवरकर वह कासीमाबाद गये पर वहाँ शहीदों में केवल हरिपाल और गोबर्धन का नाम सुनकर वे बीच में ही खडे होकर लोगों से कहते हैं – "ए साहब ! हियाँ एक ठो हमरहू बेटा मारा गया रहा । अइसा जना रहा की कोई आपको ओका नाम ना बताईस । ओका नाम मुन्ताज रहा ।"(11) और उन्होंने भीड की तरफ देखा उनकी गरदन सबसे ज्यादा तनी हुई थी ।

अंत में एक दिन हमले का शिकार बनकर यह शेर दिल आदमी खत्म हो जाता है । फुन्ननमियाँ के चरित्र–चित्रण में लेखक ने विशेष रूचि ली है । बनते–बिगडते परिवेश के प्रभाव से मनुष्य कैसे टूटता है – उसके स्वभाव– विचारों में किस प्रकार का परिवर्तन होता है आदि का लेखा–जोखा फुन्ननमियाँ का चरित्र है ।

2. मिगदाद

अ. संकोची एवं वफादार युवक

मिगदाद हम्मादमियाँ का बेटा था । उसकी उम्र सत्रह साल की थी । यह मिगदाद अब्बास से कुछ अलग था । हम्मादमियाँ ने जानबुझकर मिगदाद को तालिम नहीं दी थी । उनका कहना था कि, मिगदाद के पढ़–लिखने पर खेती कौन करेगा ? मिगदाद ने भी इस बात का कभी बूरा नहीं माना । वह बैलों की देखभाल और भैस दूहने तथा खेत–खलिहान की देखभाल में लगा रहता था । भैंस दुहते वक्त ही उसे अपने जवान होने का एहसास हुआ । एक शाम वह भैंस दुह ही रहा था कि सैफुनिया आ गयी । वह उसे देखते ही कोई न कोई बात छेडती । वह मिगदाद को चुभ जाती और रातभर परेशान करती रहती । इसी बात से मिगदाद सैफुनिया से डरने लगा और सैफुनिया शेर हो गई । एक शाम उसने जुमला कह दिया मिगदाद को इससे गुस्सा आ गया ओर तबसे उसकी तरफ देखनेपर उसे सैफुनिया से प्यार हो गया और हर शाम सैफुनिया दूध लेने मिगदाद के यहाँ जाने लगी । सैफुनिया नाईन थी और मिगदाद जमींदार का बेटा था चाहे तो वह अपनी बिरादरवाली लडकी से शादी कर सकता था पर वह ऐसा नहीं करता और आखिर में वह सैफुनिया से ही शादी करता है । इन दोनों की शादी होने पर उन्हें बिरादरी से बाहर कर दिया जाता है। फिर भी वह बिरादरी के सामने नहीं झूकता । यहाँपर मिगदाद का निडर स्वभाव दिखाई देता है। साथ ही इनकी शादी के द्वारा लेखक ने यह दिखाया है कि समाज में आम तौर पर ऐसी शादी नहीं हो सकती जहाँ लडकी लडके से चार–पाँच साल से बडी हो और अलग जात की भी है । आँ–हजरत इसप्रकार अपने से बडी और बेवा से शादी कर सकते हैं परन्तु मुस्लिम को माननेवाले इस घटना को भूल जाते हैं । यहाँ पर ऐसी शादी चित्रित कर लेखक ने इन दोनों के प्यार को उच्च धरातल पर उठाया है । साथ हो जाति भेद को नष्ट करने का प्रयास करके समाज में परिवर्तन लाने का प्रयास किया है । मिगदाद भी अंत तक फुन्ननमियाँ की तरह अपने प्रेयसी के प्रति वफादार रहता है ।

ब. स्वभाव से अक्खड

मिगदाद बचपन से ही अक्खड स्वभाव का था । बचपन से पिता ने खेती में लगानेपर

उसे अपनी खेती और बैलों से बहुत ही लगाव हो गया था । शादी होनेपर वह पिता से अलग हो गया था और अपने नाम की खेती भी बाँट ली थी । उसी जमीन में से पिता ने और जमीन लेनी चाही तो मिगदाद को गुस्सा आ गया, वह कहने लगा – "हम ई कहे आय हैं कि मँगरे पर वाली जमीन हमरी है, अऊर जेह माई के लाल में दम होये ऊ हुआँ आके हम्मे हटा के ओको जोत ले !"(12)

क. देशप्रेमी

मिगदाद को पाकिस्तान जानेवाले लोगों से बहुत नफरत है । वह खुद भी इस बात पर कभी सोचता नहीं क्योकि उसे अपनी खेती और गाय भैसों से अपनी जान से ज्यादा प्रेम है । उसके मन में हिन्दुस्तान के प्रति प्रेम है । पिताजी भी अगर पाकिस्तान चले जाये तो भी वह नहीं जायेगा वह कहता है – "अब्बा–अब्बा मजे में हुआँ चले जैहें । हम अपना हियई रहेंगे, खेती करेंगे औरों सैफुनियाँ खाना–ओना पकैहे ।"(13) अपने देश की मिट्टी के प्रति उसके मन में प्रेम है ।

ड. सहानुभूति का पात्र मिगदाद

जब उसे यह पता चलता है कि उसकी पत्नी ही उसकी बहन है तो उसका सर चकरा जाता है । सैफुनिया उसके पिता की ही हरामी औलाद हैं यह सुनकर उसके हृदय में तीव्र पीड़ा निर्माण हुई । उसके होश उड गये । सैफुनिया के साथ व्यवहार करने का उसका दृष्टिकोण ही बदल गया । सैफुनिया को उसके इसतरह बदलनेका कोई कारण मालूम नहीं है । एक दिन वह अपनी बेटी नक्कू को छोडकर मर जाती है । मिगदाद उसकी मृत्यु से टूट जाता है । उसे बहुत गुस्सा आ जाता है । गुस्से से वह सारी बिरादरी के सामने कहता है कि –"सैफुनिया हमरी कोय होय । बाकी नक्को हमरी बेटी है । सुन रहे न आप लोग । नक्को हमरी बेटी है ।"(14) अपने पिता से भी इस बात का जवाब माँगने से वह नहीं डरता पर उसके पिताजी उसे इसका कोई जवाब नहीं देते । मिगदाद सैफुनिया से अत्याधिक प्रेम करता है।उसका सैफुनिया के प्रति प्रेम निश्चल, स्थिर तथा निर्मल प्रेम देखकर पाठकों के मन में उसके प्रति सहानुभूति पैदा होती है । इस प्रसंग में मिगदाद का व्यक्तित्व पाठकों को प्रभावित करता है ।

3. हकीमसाहब

अ. मिथ्या आत्मप्रदर्शनी

हकीमसाहब गंगौली के मियाँ लोगों के प्रतिनिधि थे । वे हकीमी का व्यवसाय करते थें । यह व्यवसाय गंगौली में जोरों से चल रहा था । जमींदारी के झगडों–टंटों और हकीमी से जो वक्त बचता उसे वे गाँव के लडकों को गालियाँ देने और अपने एकलौते लडके सद्दन की जवानी के ख्वाँब देखने में गुजार देते हैं । वे अपने बेटे को पढाकर थानेदार बनाना चाहते हैं । गंगौली में सबसे पहले रेलगाडी में हकीमसाहब ने ही सफर किया था । इसकारण वे गाँव के लोगों से रेल के डिब्बों, इंजन की सीटी और आवाज के बारे में बाँते करते हैं । उन्होंने अपने बेटे सद्दन के बारे में सोचा था कि वह थानेदार हो जायेगा और खूब पैसे कमाकर एक रेलगाडी खरीद लेगा परन्तु उनका यह सपना बहुत दिन न चल सका फिर वे मोहरों का सपना देखने लगे लेकिन उनके दोनों सपने पूरे न हो सके ।

ब. संकीर्ण मनोवृत्तिवाले

"हकीमसाहब डिप्टी अली हादी के बडे भाई और इलाके के बडे जमींदार थें, उनसे थानेदार के सैंकडो काम निकलते थें, इसलिए उन्होंने सिर्फ एक सौ एक रुपया लेकर कोमिला को नामजद कर दिया ।"(15)

हकीमसाहब हकीम है पर वह छुआछूत का बडा खयाल रखते हैं । सैयदों की पाकहड्डी और खून का उन्हें बडा अभिमान है । उन्हें यह मालूम था कि यह कही नहीं लिखा है कि हरामियों से शादी नहीं हो सकती लेकिन यह बात उन्हें अच्छी नहीं लगती । संकीर्ण मनोवृत्तिवाले हकीमसाहब जब कभी भी किसी हिन्दू मरीज को देखते तो उन्हें छूये हुए हाथों को बार–बार धोते और घर जाकर स्थान करते । हिन्दुओं का छुआ हुवा वे नहीं खाते । पट्टीदारी का अभिमान उनमें है । दक्खिन पट्टी के लोगों से उनकी बनती नहीं है ।

क. स्वाभिमानी

हकीमसाहब का पढ़ा–लिखा लडका सद्दन नौकरी के लिए पाकिस्तान चला जाता है पर वह अपने बीवी –बच्चों को कुछ भी पैसे नहीं भेजता । तभी गाँव में कमालुद्दीन जैसा डॉक्टर आ जाने से हकीम साहब की हकीमी कम चलने लगी साथ ही अन्य लोगों की तरह उनकी भी जमींदारी नष्ट हो गई । इन सभी संकटों के आनेपर उनको घर की जिम्मेदारी सँभालना मुश्किल हो गया । इतने सारे संकटों के बावजूद भी वे अपने बेटे सद्दन को वापस नहीं बुलाते ।इसके पीछे उनका स्वाभिमान दिखाई देता है । इसीकारण वे उसकी पत्नी, उसकी तीन संताने, सुखरमवा चमार का कर्जा इन सब का बोझ अपने ऊपर लेकर जीते हैं ।

ड. मातृभूमि प्रेम

जवान लडका सारी जिम्मेदारियों को बूढे बाप के कंधोंपर थोपकर पाकिस्तान चला जाता है । उसकी इच्छा अपने बाप को साथ ले जाने की थी । परंतु बाप हकीमसाहब ने इसका विरोध करते हुए अपनी मातृभूमि भक्ति व्यक्त की ।

इ दु:खद अंत

हकीमसाहब का अंत भी अत्यंत करूण होता है । हकीमसाहब एक दिन पाखाने में पैर फिसलकर गिर पडते हैं । उनके पैर की हड्डी टूट जाती है । वक्त के साथ बदलना हकीमसाहब के लिए संभव नहीं बनता । जीवनभर हकीमी करनेवाले हकीमसाहब की लडकी उनके शत्रु कमालुद्दीन की सफेद गोलियाँ लाती है तो उन्हें दु:ख होता है।
कमालुद्दीन का विरोध करनेवाले हकीमसाहब को उसकी गोली का आधार लेना पडता है । परिणामत: धीरे–धीरे उनका व्यक्तित्व टूटता हुआ दिखाई देता है । हकीम साहब अपने बेटे से कहते हैं – "नाही बेटा, हम ई सोच रहें कि इहो दिन देखे को रह गया रहा कि कम्मो हमरा इलाज करे ! जिंदगी भर नमाज–रोजा किया तो ओका बदला ई मिला कि डॉक्टर कमालुद्दीन आके नब्ज देख गए । हे बेटा, अल्लाह मियाँ की हां का इन्साफ–उंसाफ जाता रहा...।"(16)
और थोडी ही देर में हकीम साहब की मृत्यु हो गई । अंत तक उन्होंने कम्मो की दवाई को स्वीकार नहीं किया और मृत्युतक वे स्वाभिमान से रहें ।

4. नवाबसाहब

नवाबसाहब लेखक के फूफा थें । वे बडे गुस्सेवर थे । उनका हुक्म कोई नहीं टालता था । वे गोहना मोहम्मदाबाद के मामूली जमींदार थें लेकिन उन्हें फूफी की जायदाद मिल गयी थी इससे वे नवाब साहब कहे जाने लगे थे । उनके छोटे भाई घर आते हैं तब उनके घर की गरीबी का पता चल जाता था ।

5. दादा

दादा बडे ही बदसूरत थें । वे ज्यादा अमीर नही थें । उनकी दूसरी शादी हो गई थी । उनकी बीवी बहुत खुबसूरत थी । वे पाकहड्डी के थे । वे गाजीपुर की कचहरी में नौकरी करते थें । जब दादा पागल हो गये तब उन्हें अलग कमरे में बंद किया गया । दद्दा उनकी बडी सेवा करती, उनका बदन साफ करती, कमरे को धोती, कपडे पहनाती और उनके चले जाने के बाद दादा कपडे फाड देते । एक रात वे कमरे से भागे और पोखरे के पास एक गढ्ढे में डूबकर मर गये ।

6. नज्जन

नज्जन मीरासी जौनपुर के रहनेवाले थे । वे गाजीपुर के तवायफों को गाना सिखाते थे । बशीरमियाँ ने उन्हें चार बीघे जमीन देने का वादा करनेपर वे गंगौली आये थें । वे अपनी बीवी गफूरन और दो बेटियों, दिलआरा और सितारा के साथ गंगौली आये थें । दोनों बहुत ही खुबसूरत थी । नज्जन अच्छे सोजखाँ भी थे और अपनी बेटियों को भी मीठी आवाज दी थी । उन्हें अपनी बेटी सितारा और अब्बास के संबध के कारण एक दिन गंगौली को छोडना पडता है ।

7. अतहरमियाँ

अतहरमियाँ बहुत ही खुबसूरत थें । सैयदों में रंडी रखना बूरा नहीं मानते थे पर उन्होंने कभी दूसरी औरत की तरफ आँख उठाकर भी नहीं देखा । जबकि बहुत सी औरतें उन दिनों जवान खुबसूरत थीं । उनकी बीवी रजिया कानी थी फिर भी उन्होंने अपना मन कही ओर

नहीं लगाया । वे पूरा साल अफीम खाकर मोहर्रम की तैयारीयों में लगे रहते थें । उन्होंने पूरी जिंदगी मोहर्रम की तैयारियों में ही गुजार दी ।

8. मासूम

लेखक राही मासूम रजा जी भी इस उपन्यास में पात्र कें रूप में सामने आये हैं । इस उपन्यास में उनके घर, उनकी अम्मा, अब्बू, चाचा, चाची, दादा, दादी सभी सदस्य आये हैं । उनका पूरा परिवार गंगौली में रहता है और लेखक अपने माता पिता के साथ गाजीपुर में रहते थे । मोहर्रम के दिनों लेखक अपने भाई–बहन के साथ गंगौली में आकर रहते थें । उनकी अम्मा और चची में बनती नहीं थी । घर में सभी लोग "भोजपूरी उर्दू" बोलते थे । चची "खडीबोली उर्दू" बोलती थी । उनके अब्बा फैजाबाद और लखनऊ में पढ़े होने के कारण उर्दू बोलते थे । लेखक की छोटी बहन अफसरी बारह–पन्द्रह साल दिल्ली में रहने के बाद भी उर्दू नहीं बोल पाती ।

लेखक मासूम अपने मुँह से इस उपन्यास की कथावस्तु कहने में सफल हुए हैं ।

9. **कमालुद्दीन**

कमालुद्दीन रहमान–बो ओर जवाद हुसैन की हरामी औलाद थी । वह अपने माँ से बहुत प्यार करता था । जब उसकी माँ को जवादमियाँ मारते या गालियाँ देते हैं तब वह अपने बाप से झगडा करता है । उसे बडा अरमान था कि गाँव के लोगों की तरह ही उसका बाप उसे प्यार से देखे । लेकिन गंगौली के सभी लोगों को मालूम था कि वह हरामी है । और इसी कारण वह अेकला ही रहता जवानी में वह सईदा से प्यार करने लगा वह उससे शादी करना चाहता है । वह अलीगढ में पढ–लिखकर डॉक्टर बन गया और गंगौली में वापस आकर दवाइयाँ देने लगा है । उसके पिताजी उसकी शादी रहमान–बो से करना चाहते हैं । कम्मो को खूद हरामी होने के कारण सईदा से शादी करना मुमकिन नहीं यह मालूम था इस बात पर उसे बडा गुस्सा आ जाता है । लेखक ने कमालुद्दीनद्वारा नई पीढी को दर्शाया है ।

उपर्युक्त पात्रों के माध्यम से पता चलता हैं कि "आधा गाँव" उपन्यास पात्रों का

चरित्र–चित्रण करने में सफल बन गया है । उपन्यास के पात्र गंगौली में स्थित शीआ मुस्लिमों की सभी विशेषताओं को प्रस्तुत करते हैं । इन पात्रों के चरित्र–चित्रण से उस अंचल के विविध रूपों का दर्शन हमें मिलता है । राहीजी ने गंगौली को पात्र के रूप में प्रमुख स्थान दिया है जो आँचलिक उपन्यास के लिए आवश्यक है ।

स्त्री पात्र

1. सईदा –

सईदा एक पढ़ी–लिखी लडकी है ।वहफर्स्ट डिवीजन में हाईस्कूल कर अलीगढ़ में पढती है । सईदा तन्नू से प्यार करती है । वह उससे कोई दस–बारह साल से छोटी थी । तन्नू उसे बेहद चाहता है । सईदा को तन्नू बचपन से छोटे–छोटे तोहफे दिया करता है । तन्नू हर पल जंग में भी सईदा की याद करता है । सईदा को उसके दादा ने आगे पढाने का फैसला किया था परन्तु गाँव के लोगों को उसका पढ़ना बिल्कुल अच्छा नहीं लगता है । वे लडकियों को अँग्रेजी पढाना बुरा मानते हैं । बशीरा बी तो कहती है कि उसी के कारण हमारी सारी बिरादरी कीनाक कट गयी ।

जवानी में सईदा खुबसूरत दिखती है । उसका रंग गोरा है तथा छोटे-छोटे सफेद दाँत, लंबी गर्दन, सियाह बाल और आँखें, तराशा हुवा मरमरी जिस्म इन सब कारणों से वह बहुत ही खुबसूरत दिखाई देती है । तन्नू के साथ–साथ जवादमियाँ का कलमी बेटा कम्मो भी उससे बहुत प्यार करता है । सईदा तन्नू से प्यार करती है । तन्नू की शादी उसकी मर्जी के खिलाफ सलमा से तय करते हैं पहले तन्नू इस शादी से इन्कार करता है परंतु माँ और बाप के कहनेपर उसे सलमा से ही शादी करनी पडती है । सईदा के प्रति अपने प्यार को तन्नू अंत तक प्रकट नही कर पाता । सईदा भी अपना प्रेम अपने मन में ही छिपाये रखती है । कम्मो सईदा से विवाह करना चाहता है परन्तु अपनी रखैल माँ के कारण तथा खूद कलमी औलाद होने के कारण वह ब्याह नहीं कर सकता ।

सईदा के माध्यम से लेखक ने नई पीढी की पढी–लिखी लडकियाँ अपने पैरोंपर खडी हो

जाती है यह दर्शाया है । जिस गाँव की औरतें उसकी पढाईपर व्यंग्य करती है आगे चलकर वही औरतें उसकी तारीफ करती है । सईदा अपने घर की आधी जिम्मेदारियाँ अपने सीर पर उठा लेती है । वह अपने पैसों से माँ–बाप को अच्छे कपडे लाती है जिसे देखकर गाँव की औरतें खुश होती हैं । उसकी नौकरी को उसके पिता का झेल लेना विशेष था क्योंकि वे एक शरिफ हिन्दुस्तानी बाप थे जो अपनी बेटियों से मदद लेने तैयार नहीं होते । सईदा के माध्यम से लेखक ने परिवर्तन दिखाया है ।

2. कुलसुम

कुलसूम गुलाम हसन खाँ के छोटे भाई करामतअली खाँ की बीवी है । उसका गाँव ताजपुर है । कुलसूम बहुत ही खुबसूरत है । उनके पडोस में फुन्ननमियाँ रहते हैं । उन्होंने एक बार उसे देख लिया और उसपर आशिक हो गये । एक दिन हकीम साहब के छोटे भाई डिप्टी सय्यद अली हादी की बरात जा रही थी तब दोनों पड्डियों में सन्नाटा छा गया था । उसी समय फुन्ननमियाँ कुलसूम को जबरदस्ती उठा लाते हैं । तब कुलसूम बच्चें की माँ बननेवाली थी । फुन्ननमियाँ इस कारण जेल चले गये । मुकदमे के बीच ही उनकी मरदानगी ने कुलसूम का दिल जीतलिया । फुन्ननमियाँ घर वापस आने पर कुलसूम भी उनके यहाँ चली गयी । आगे चलकर कुलसूम को दस बच्चे हो गये ।

3. उम्मुल हबीबा

उम्मुल हबीबा हुसैन अली मियाँ की विधवा बहन थी । बचपन में ही उसका विवाह हो गया था और शादी के तीसरे दिन ही वह विधवा हो गई । बीस साल से वह अपने भाई के पास रहती आयी है । विधवा होने के बाद से ही वह सफेद कपडे पहन रही थी । उसकी और आसिया की शादी में सिर्फ तीन दिन का फर्क था । और आसिया छः बच्चों की माँ थी । जब किसी के घर शादी होती तो उम्मुलहबीबा को कोई छू नहीं लेता । कंदूरी के फर्शपर उसकी परछाई नहीं पड सकती थी । दुल्हन के कपडों को वह छू नहीं सकती थी । हुसैनअली मियाँ उसका बहुत खयाल करते थे । परन्तु भाई होकर भी वे उसे घरेलु जिन्दगी नहीं दे सकते थे । उसकी भाभी भी उसे कभी परेशान नहीं करती थी । लेकिन जब उनकी पहली लडकी असगरी की कंदूरी का फर्श बिछा तो भाभी सकीना ने उसे वहाँ से हटा दिया इस बात पर उम्मुल रो पडी

12709
A

। उसे विधवाओं के तौर–तरिके मालुम नहीं थे । धीरे–धीरे उसे यह सब बाँते मालूम हो गई ।

उम्मुल हबीबा हमेशा यह सोचती कि आँ हजरत ने पहली शादी एक राँड–बेवा से की तो भी आँ–हजरत से बडे हैं कि वे बेवा से शादी नहीं करते । जब मौलवी बेदार एक चमाईन की बेटी से विवाह करने जा रहे थे तब उनके खिलाफ निकाले मोर्चे में सबसे आगे उम्मुल हबीबा थी । उम्मुल हबीबी को बच्चों का शौक बहुत था । परन्तु वह कभी कभी माँ नहीं बन सकती थी । इसीकारण से वह मौलवी बेदार की शादी के खिलाफ थी और रात–दिन बच्छन को कोसा करती थी । उम्मुल हबीबा को जब पता चला कि बछनिया सफिखा के साथ भाग गयी तो उसे बुरा लगा क्योकि जब उसकी दादी का पाला हुआ अमजदवा उसकी तरफ देखकर मुस्कराया करता था परन्तु खानदान की इज्जत का खयाल करके वह चूप रही थी । बछनिया का सफिखा के साथ हो गये विवाह पर नईमा बी एक तरह से खुश थी क्योंकि वह सोचती है मौलवी बेदार अगर बछनिया जैसी लडकी से शादी करने पर तैयार हो गये तो उनकी पोती उम्मे हबीबा में क्या खराबी है ? अगर बातचीत चलायी जाय तो यह रिश्ता हो सकता है । इस पात्रद्वारा लेखक ने विधवा समस्या को चित्रित किया है ।

4. झंगटिया–बो

झंगटिया–बो काली थी पर बहुत खुबसूरत सौंधी और मीठी थी । कई लोग इसपर जान छिडकते थे । सुलैमान–चा से उसका विवाह हो गया तब वह अठारह साल की थी । बाद में उसे चेचक निकल आयी । वह चमाईन होने के कारण सुलैमान–चा उसकी छुयी हुई किसी भी चीज इस्तेमाल नहीं करते थे क्योंकि वे मजहबी आदमी थे । वे अपना खाना खुद बनाते थे । इसके बावजूद भी झंगटिया–बो उन्हें बहुत चाहती थी । सुलैमान चा ने उसे दो–तीन मुहर्रम के नौहे याद करवा दिये थे । वह बरसों से मजलिसों में इन्ही नौहों को पढती आ रही थी । उसकी आवाज बहुत दर्दभरी और मीठी थी । उसके नौहें सुनकर लोग रोते थे झंगटिया–बो की ही बछनिया लडकी थी जिसके हुस्न से वह डरने लगी थी । जब उसकी बेटी बछनिया का विवाह एक बूढे मौलवी बेदार के साथ तय किया तब झंगटिया–बो को पहली बार सुलैमान पर गुस्सा आ गया था । वह सोचती कि अपनी बछनिया को किसी भी चौधरी का लडका आसानी से मिल

सकता है । बछनिया का सफिखा के साथ कलकत्ते भाग जाने के बाद झंगटिया–बो का भी घर में पता नहीं था । सभी लोगों को लगा कि शायद वह भी किसी और के साथ भाग गयी । सारी गंगौली सुलैमान की वापसी का इंतजार कर रही थी । उनके आनेपर वे भी थककर सो गये और आधी रात जब उन्हें मुँह हाथ धोने का खयाल आया तो वे आँगनवाले कुएँ पर रस्सी लेकर गये और रस्सी कुएँ मे फेंकते ही रस्सी के साथ झंगटीया–बो की लाश आ गई ।

कुछ दिनों के बाद सुलैमानचा भी एक रात झंगटिया–बो को ढूँढते हुए उसी कुएँ में गुम हो गये । झंगटिया–बो द्वारा लेखक ने दुनिया को सबसे बडी चीज अपनी इज्जत को महत्व देनेवाले लोगों का चित्रण किया है ।

5. नईमादादी

लेखकजी के घर के सामने की खलवत में ही नईमादादी रहती थी । मँझले दादा के अब्बा को इस नईमा दादी में कौनसी ऐसी बात पसंद आयी थी कि उन्होंने अपनी बीवी को छोडकर इससे शादी कर ली इसे कोई नहीं जानता । नईमादादी जुलाहीन थी वह सैदानियों के साथ नहीं रह सकती थी ।

6. हुस्सनदादी

यह लेखक की दादी हैं । उसे लेखकने अपनी आँख खोलने से लेकर उनकी आँख बंद हो जाने तक देखा है । वह बडी खुबसूरत पर बहुत कंजूस थी ।

7. टामीबाई

टामीबाई एक वेश्या थी । बाद में वह शिव–भक्त हो गई और शहर के बाहर बाग में रहने लगी जो उन्हें एक रईस ने दिया था । उनके लडके ने उनपर पतिता होने का इल्जाम लगाया और मुकदमा कायम कर दिया था । टामी ने लेखक के पिताजी को वकील किया था । उसकी आवाज बहुत अच्छी थी । वह पान बहुत खाती थी । लेखकने भी उसकी गिलौरी बचपन में बडे शौक से खायी थी ।

8. दमडी–बो

दमडी–बो जिस तरह बेनाम आयी थी उसी तरह बेनाम रही गयी । दमडी–बो को भी अपना नाम मालूम नहीं था । उनका कोई मैका नहीं था । उसने तीन शादियाँ की थी लेकिन उसके तीनों ससुरालवाले अगर इकठ्ठा होकर बाँते करे तो उन्हें पता नही चलेगा कि यह औरत एक ही है । उसके मर जाने पर उसे निहायत काली ओर बदसूरत दमडी–बो कहने लगे ।

9. सितारा

सितारा नज्जन और गफूरन की बेटी थी । उसकी बडी बहन दिलआरा भी जवान थी पर सितारा उससे ज्यादा खुबसूरत थी । नाक–नक्श तीखा था, साँवला रंग, गहरी भूरी आँखें, गहरे सियाह लम्बे बाल थे । वे इतने लम्बे थे कि जाडे में उन्हें ओढ सकती थी । उसकी आवाज बहुत मीठी थी । वह हम्मादमियाँ के बडे बेटे अब्बास से प्यार करती थी जो अलीगढ में था । वह सितारा को मिलने आता था । उन दोनों की शादी नहीं हो सकती क्योंकि सितारा तवायफ की बेटी थी और अब्बास सैयद खानदान का था । जब वह माँ बननेवाली थी तब उसके घरवालों ने गंगौली छोड दी और उसकी शादी कही और कर दी उसे बच्चा होनेपर उसका नाम उसने अब्बास रखा गया ।

10. नईमा–बी

नईमा–बी जुलाहिन थी । झंगटिया–बो के सामने वह सैदानी बन जाती थी । उसके साथ दूसरी सैदानियाँ बुरा बर्ताव करती है । उसका इंतकाम वह झंगटिया–बो से लिया करती थी । झंगटियाँ–बो से वह थोडा उच्च थी क्योंकि झंगटिया–बो चमाईन थी और यह जुलाहिन, दुसरा यह कि मौलवी बेदार के अब्बा मौलवी दिलदार उसे निकाह पढाकर लाये थे ओर झंगटिया–बो को हम्माद–मियाँ ने बीना निकाह के रख लिया था इन दो कारणों से वह झंगटिया–बो पर रौब जमाती है । उसका बेटा हम्माद हुसैन था ।

इन पात्रों के अलावा उपन्यास में कई स्त्री पात्र आये हैं जिनमें मेहरुनिया, सैफुनिया, जनुईद, गुलबहरी, बछनिया, गुलाबीजान, रब्बन–बी, नईमा–बी, दुलरिया, सकीना, रजिया

अकबरी बीवी , सरवरीबाजी, बदरुन, कुबरा, सल्लो सलमा, बदरूनिया, फखरुन आदि है ।

स्त्री–पात्रों के माध्यम से भी गंगौली के विविध रूपों का चित्रण हमें मिलता है । लेखक ने मानवीय गुणों से युक्त पात्रों कां चित्रण किया है । इनमें से कई पात्र वर्ग का प्रतिनिधित्व करनेवाले हैं तो कई अपने आपका ।

पात्र एवं चरित्र–चित्रण की दृष्टि से "आधा गाँव" सफल उपन्यास माना जाता है । पात्रो की संख्या अधिक होने पर भी पाठक के रसास्वादन में बाधा उपस्थित नहीं होती ।

ङ. **संवाद कथोपकथन**

कथोपकथन या संवाद का भी आंचलिक उपन्यासों में महत्वपूर्ण स्थान है । इससे कथा का विकास, घटनाओं में सजीवता, तथा पात्रों की अन्तर्द्वद्वता व्यक्त होती है । इन सब बातों को पूर्ण करने के लिए उपन्यासकार कथोपकथन में उपयुक्तता, संक्षिप्तता, स्वाभाविकता, मनोवैज्ञानिकता का समावेश करता है । इन्ही सभी बातों से अंचल के विविध रूपों को उद्घाटित किया जा सकता है । उपन्यासकार जिस अंचल का चित्र खिंचना चाहता है तथा वहाँ के जिन वर्गों के पात्रों का चित्रण करना चाहता है वह उनसे उसी प्रकार की भाषा प्रयोग करवाता है जिसे वे प्रयुक्त करते हैं । आँचलिक उपन्यासों में संवादों का उद्देश्य उस अंचल के जीवन को प्रस्तुत करना होता है । मनोवैज्ञानिकता से युक्त कथोपकथन प्रभावशाली माने जाते हैं ।

आँचलिक उपन्यासों में परिवेशगत वर्णनात्मकता को अधिक महत्व होता है । कथोपकथन के लिए वही भाषा प्रयुक्त की जाती है जो सम्पूर्ण उपन्यास के भौगोलिक परिवेश के लिए योग्य है। उपन्यासकार संवादों को उनकी बोली भाषा में प्रयोग में लाते हैं । इनके बोली में व्याकरण के नियमों का पालन करना आवश्यक नहीं माना जाता क्योंकि जिन व्यक्तियों का चित्रण किया जाता है वे अनपढ़, गँवार होते हैं ।

"आधा गाँव" उपन्यास के कथोपकथन में उपर्युक्त सभी गुण पाये जाते हैं । यह उपन्यास गंगौली के मुसलमानों की कहानी है । राही जी ने उत्तरप्रदेश के भोजपुरी उर्दू का प्रयोग किया है जो उत्तरप्रदेश के मुस्लिम लोगों की बोली है । जिससे उपन्यास यथार्थ जान पडता है । साथ ही लेखक स्वयं उस परिवार का सदस्य होने के कारण ये संवाद सजीव बन गए हैं । "आधा गाँव" के संवाद से प्रत्येक चरित्र का उद्घाटन अच्छी तरह से हुआ है । मोहर्रम का वर्णन इस उपन्यास का खास आकर्षण है । बीच-बीच में आनेवाले छोटे-छोटे संवादों से पाठक उत्साही बनता है । यहाँपर "आधा गाँव" में प्रयुक्त संवादों की निम्नलिखित विशेषताएँ उपलब्ध होती हैं –

1. मनोदशा व्यक्त करनेवाले संवाद

बचपन में जब एक दिन लेखक टामीबाई के पास जाते हैं तो टामीबाई उन्हें गिलौरी खिला देती है । टामी एक रंडी थी इसलिए लेखक को यह खयाल सताने लगता है कि उसकी गिलौरी खाकर कोई भूल तो नहीं की ? इसलिए वह वहाँ से भागते हुए जाकर भाई साहब से पूछते हैं – "हम टामी का पान खा लिया है । मैंने बिसूरकर कहा, "उ रंडी है न !"

"फातमा दादी से पूछो ।"(17)

और लेखक पूछने उनके घर चले जाते हैं । यहाँपर लेखक की बचपन की मानसिक अवस्था स्पष्ट होती है । एक वेश्या का पान खाने से बडा अपराध हो गया है ऐसा उसे लगता है । उक्त संवाद से पात्र की मनोदशा स्पष्ट होती है । छोटे बच्चे बडों की बातों को सच मानकर व्यवहार करते हैं ।

2. सहज–स्वाभाविक संवाद

बचपन में लेखक फुट्टू को एक पत्थर मारता है तो फुट्टू चीखकर बैठता है तब लेखक को लगता है कि फुट्टू को उसने मार डाला । भागते हुए घर जाकर भाईसाहब से कहते हैं – "हमने फुहू का कतल कर दिया है ।"

"का कर दिया है ?"

"कतल !"

"कब ?"

"थोडी देर भइ....."

"बाकी फुट्टूत हसीना दादी के साथ घर में बइठे है ।" भाईसाहब ने कहा, "दादी मार अम्मा से शिकायत करती रहीं कि फुट्टू अपना सिर न झुका लिहिन होता त खुदा–न ख्वास्ता फुट्टू को जरुर कुछ हो जाता ।" भाईसाहब ने हसीनादादी की नक्ल की । मेरी जान–में–जान आ गयी, "त का ऊ जिंदा है ?"

"हाँ"

"त.... पुलिस हम्में ना पकडिहे ना ?"

"न" (18)

यह सुनकर लेखक खुश हुए और कबड्डी खेलने चले गये । प्रस्तुत संवादों से छोटे बच्चों की शरारती हरकते तथा अपराध बोध एवं अपराध बोध से मुक्ति का आनंद झलकता है । उपन्यासकार ने अनेकानेक स्थानोंपर सहज स्वाभाविक संवादों का प्रयोग किया है ।

3. यथार्थता को व्यक्त करनेवाले संवाद

फुन्ननमियाँ, हम्मादमियाँ और ठाकुरसाहब के वार्तालाप में हमें यथार्थता का बोध होता है जैसे "फुन्ननमियाँ कहते हैं – "कहिये !"

"मीर साहब, झिंगुरिया के मामले में कुछ बात करनी थी ।" दरोगाजी ने कहा ।

"करिये" ।

"वह नकब उसी ने लगायी थी ।"

"बाकी हमने त सुना है कि ऊ हवालात में रहा ।"

"मुझे मालूम है कि आपने अफसर–इंचार्ज युसुफपुर को तीन सौ रूपये दिये थे ।"

"का ऊ ई बयान दिहिन है ?" वह खडे हो गये,

"हमारे पास फाजिल वक्त ना है ।"

"कोई आदमी सरकार से टकराकर नहीं जीता है, मीर साहब !"

"ना जीता होइये ! बाकी आपउ सरकार ना हैं, ठाकूर साहब !" फुन्ननमियाँ ने दरोगाजी की आँखों में आँखें डालकर कहा, "और इहि बखत आप हमरे दरवाजे पर हैं, नहीं त कौनो माई का लाल ऐसा त ना है कि फुन्ननमियाँ को धमकाकर चला जाय । हेई हम्माद– अम्माद को अपनी दरोगाई दिखलाइए"

"हमने सुना है कि आप सरजू पाँडे को चंदा देते है ।"

फुन्ननमियाँ मुस्कराये । मगर वह मुस्कराहट बडी जहरीली थी ।

"अभई तक त ना दिया है ।बाकी कहिए त देवे लगें । का कहीं कानून में ईहू लिखा है कि कांग्रेसवालन को कोई चंदा न दे । का तूँ डुग्गी पीटे रहियों ?" उन्होने दुखरनवा चौकीदार से पूछा "हम त ना सुना !"

"आपने अब तक वार–फंड में चंदा भी नहीं दिया ।"

'मालगुजारी त ना न बाकी है !" फुन्ननमिया ने पूछा,

"एक ठो लडका त चंदे में दे दिया है ना । छः महीने से कौनो खबरो ना आयी है कि इम्तियाज जियत हे कि मर गये । कहिए तो मुमताज को भेज दें । वार फंड

.....काहे का वार फंड । हम कहा रहा जर्मन से लडे को ? कि हम वार–फंड दे ? कपडा हमें ना मिले । ए भाई, खाय की हर चीज बजार से बिलाय गयी है । नजर न्याज को चीनी हम्में ना मिले । मिठ्ठी का तेल त आबे–जमजम हो गवा है । खास लोगन को मिलता है । हम एक डब्बल न देंगे वार–फंड में । जुअन करे को हो, तुअन कर लियो"।(19)

यहाँपर जमींदारों के कर्मों का और साथ ही उस वक्त की राजनीतिक स्थिति का पता चलता है ।

4. जटिल संवाद

मुमताज की शहादत के जुर्म में फुन्ननमियाँ गिरफ्तार हो गये । जब कुलसूम को पता चला कि हम्माद मियाँ ने फुन्ननमियाँ के खिलाफ गवाही दी है तो वह उसे बददुवाएँ देने लगती है । यह बाँते सैफुनिया कें माध्यम से नईमा–बी तक पहुँचने लगी । इनमें होनेवाले वार्तालाप में जटिल संवाद दिखाई देता है जैसे "और का मालूम के कुलसूमै फँसी होए दमाद से । हाँ, और का । ऐसी औरतन केकौन ठीक । दो ठो भतार कर चुकीं, तीसर को जोह रहीं ।"

बहुत मुमकिन है कि कुलसूम को नईमा–बी इन्ही गालियों से कोई इशारा मिला हो । क्योंकि मुमताज की बरसी के तीसरे ही दिन उसने मौलवी बुलवाकर दो बोल पढवा दिये और मगफिये रजिये के तीन बच्चों की माँ बन गयी ।

"मैं त पहले ही कहे रह्यूँ, "नईमा–बी ने रब्बन–बी से कहा, "बाकी अब खुदा न करे, मगफिये मरिहे तब ई कुलसुमिया मुहम्मद हुसैन से के–का ब्याह करी हे ?" रब्बन ने सवाल किया ।
"और मैं त सुन रहयू कि मुहम्मद हुसैन बीवी को कल–कत्तेहू न ले जा रहें ।" कुबरा ने कहा,
"हैय्यें रह के पुद्दन, दुल्लन, फत्तू और पम्मू की देखभाल करीहें ।"
"ल्यो !" रब्बन–बी ने अपनी एकलौती आँख नचायी,
तुहरियों बातें ! का ओके लडका ना होइहे ?"
"अ, होइहे काहे ना, "नईमा बी बोली, "बाकी काने के का होइहे । कोई कुछ कह दे त जबान पकडी जाय । बाकी के को ना मालूम की जब से फुन्नन की सजा भई है, झिंगुरिया का लडका रोजे त आवत है । खैर, खबर मालूम करें, अठ्ठारह–बीस बरस का होइहे !"

बात यह थी कि झिंगुरिया को तो सरकारने फाँसी दे दी थी .....

"हे दुल्लन मियाँ ।" यह आवाज सुनते ही रूकय्ये का लडका दिलशाद हुसैन उर्फ दुल्लन लपककर बाहर आता । "कहा, मियाँ ! तुहार मुसलमानी का का हाल बाय !" यह सुनते ही दुल्लन मजबूती से दामन को थाम लेता । उसकी मुसलमानी अभी तक नहीं हुई थी । रूकय्ये ने कोई मन्नत मान रखी थी कि जब वह बारह साल का होगा तब उसकी मुसलमानी होगी । इस बीच में वह कई मुसलमानियों का हश्र देख चुका था, इसलिए खौफजदा रहता था ।

"अच्छा जाये दे, भैया । ना कटिब । जा, भीतर जाके आपन नानी से पूछ आवा कि कौनो काम त ना बाये ?"(20)

इसप्रकार के जटिल संवाद भी है जो पाठकों के समझ में जल्दी नहीं आते ।

5. वातावरण निर्मिति करनेवाले संवाद

मिगदाद की शादी होने पर वह अपने पितासे अलग रहता है उसने अपने नाम की खेती भी बाँट ली है । उसी जमीन में से पिता ने और जमीन लेनी चाही तो मिगदाद को गुस्सा आ जाता है । वह कहता है कि जो भी मेरी जमीन जोत लेगा उसे पहले मुझे हटाना होगा । तभी हम्माद मिया ऊसे समझाते हैं कि वह तेरे पिता हैं तभी वह कहता हैं – "बाप ओप हम ना जन्ता" मिगदाद बोला, "ऊ जमींदार हैं और हम काश्तकार । अऊर ईहो सून लीजिए की फुन्नन–चा अऊर परूसरमवा दूनों हमरे साथ है ।"

"का कहिन हकीम अली कबीर ?" फुन्ननमियाँ ने पूछा ।

"अरे, ऊ कही का सकते हैं !" मिगदाद ने कहा ।, "हम कह दिया कि ऊ जमीन हमरी है, अऊर ओको हमहीं जोतेंगे ।"

"मैं तो यह कहता हूँ कि हम्माद मियाँ के जोर–जुलुम का जमाना ख़तम हो गया ।" परूसराम ने कहा और फिर उसने अपनी गाँधी–टोपी को जरा और कज कर लिया, "जमीन का मालिक ऊ है जो हल चलायी, जो मेहनत–मसक्कत करी । आप त हल का मुठिया थाम के मियाँ लोगों से अपना रिश्ता तोड़ लिया हैं । आप किसान भगवान है !" उसने दोनों हाथ जोडकर मिगदाद को नमस्कार किया ।"(21)

इस प्रकार के संवादो से वातावरण निर्मिति सहायता मिली है ।

6. पात्रानुकूल संवाद

गंगौली के मोहर्रम में उत्तरपट्टी और दक्खिनपट्टी में एकबार झगडा होता है, लाठियाँ चलती है जिससे मुकदमा कर दिया जाता है । ठाकुरसाहब जब गंगौली में मुजरिमों को गिरफ्तार करने जाते हैं तो एक भी मुजरिम उन्हें नहीं मिलता । वे अब्बू मियाँ के साथ सिपाही भेजते हैं जो मुजरिमों को गिरफ्तार कर सके । वे वापस लौटकर बताते हैं कि गाँव में एक भी मुजरिम नहीं हैं ।

"मीर साहब !" ठाकुर साहब ने अब्बू मियाँ केा मुखातिब किया, "मौलवी बेदार की हालत नाजूक है ..... यह मामला दब नहीं सकता । मैं दो हजार गवाह पेश करुँगा कि ये लोग वारदात की जगह पर मौजूद थे ....."

"जरुर पेश कीजिए ठाकुर साहब !" अब्बू मियाँ ने कहा,

"हम आपको झूठी शहादतें बनाने से कैसे रोक सकते हैं ?"

"बस, इसका खयाल रखियेगा," वजीर मियाँ बोले, "कि उन गवाहों में से कोई उत्तर–पट्टीवालों का आसामी न हो । मैं यह बात इसलिए कर रहा हूँ कि जिरह करने को मैं ही खडा हूँगा।"(22)

उक्त संवादों से पात्रों की मनोदशा स्पष्ट होती है । उपन्यास में अनेक स्थानोंपर इसप्रकार के संवादों का प्रयोग मिलता है ।

7. प्रसंगानुकूल संवाद

मौलवी बेदार रूढ़ी–परम्परावादी शीआ मुस्लिम थे । उन्होंने जब से बछनिया को देखा तब से वे उसपर आशिक हो गए । वे उससे शादी करना चाहते थें । उनकी उम्र बछनिया से बहुत अधिक थी । साथ ही बछनिया हरामी औलाद थी और मौलवी बेदार सय्यद थे । जब वे बछनिया से शादी कर लेने की बात हकीम साहब से कहते हैं तब हकिम साहब कहते हैं – "भई, ऊ तो हरामी है !" आखिर उन्होंने ऐतराज का एक पहलू निकाल लिया ।

"त ए में ओका कौन कुसूर है ?" मौलवी बेदार ने कहा ।

"ओका कुसूर त ना है , बाकी लोग का कहिहें !"

"ई त कही ना लिक्खा है कि हरामी लडकी से निकाह नाजायज है ..... आखिर हमहूँ सुलतान, ब मदारिस में भाड़ ना न झोंका है । हूँआँ कुराने–हदीस न पढते रहे !"

"त का कहीं ई ना लिक्खा है कि हरामियन से बियाह ना करे को..."(23)

हकीम साहब को भी मालूम था कि यह कहीपर नहीं लिखा है । पर हरामी औलाद से किसी सैयदजादा का शादी करना वे अपनी शान के खिलाफ मानते हैं ।

इसप्रकार प्रसंगानुकूल संवादों के प्रयोग उपन्यास में रोचकता आ गयी है । सवादों में प्रयुक्त स्थानीय भाषा प्रयोग के कारण उपन्यास क्लिष्ट–दुरुह बन गया है ।

4 भाषा

भाव को अभिव्यक्त करने का भाषा ही एक महत्वूपर्ण साधन है । किसी अंचल की विशिष्टता का पता भाषाद्वारा ही होता है । जितना विशिष्ट अंचल का जीवन होगा उतना ही विशिष्ट उस भाषा को बनाना पडेगा । आंचलीक कृतियों में सभ्यता से दूर के जीवन की अभिव्यक्ति होती है । डॉ.रामदरश मिश्र ने स्थानीय बोली को अनिवार्य मानते हुए कहा है कि – "एक तो स्थान विशेष का वातावरण चित्रित करने के लिए, दूसरे वहाँ के जीवन को जीवन्तता और उसकी मूल सहजता के साथ अंकित करने के लिए । भाषा ऊपर से ओढी हुई चीज नहीं होती तो वह स्थान विशेष के लोगों के संस्कारों और अनुभूति के साथ अनिवार्य भाव सें संपृक्त होतो है । अतः कुछ शब्द और मुहावरें इस प्रकार वहाँ के जीवन सत्यों के साथ जुड़े होते हैं कि वे सत्यविशेष के साथ स्वतः लगे हुए चले आते हैं । उनका अनुवाद होता है, परन्तु अनुवाद भावों, अनुभूतियों या सत्यों की मूल गंध को वहन करने में असमर्थ होता है"(24) आँचलिक उपन्यासकारोंने उपन्यासों में आंचलिक भाषा का प्रयोग करके उपन्यासों में सजीवता लाई है ।

राहीजी के "आधा गाँव" उपन्यास की सबसे अधिक आलोचना इसकी भाषा को लेकर हुई है । ज्ञानचंद गुप्त ने इनकी भाषासंबधी लिखा है – "गंगौली गाँव को गालियों का साम्राज्य बना देना लेखकीय प्रयोगशीलता है । अधिकतर गालियाँ, गालियों के लिए ही प्रयुक्त हुई दृष्टिगोचर होती है । जिसमें रचनात्मकता की मांग कम ओर लेखकीय मसीहापन ही बोलता है ।"(25)

"आधा गाँव" के भाषा शिल्प के संबंध में प्रकाशक का कथन है कि "जिस जिंदगी को इस उपन्यास में उठाया गया है वह जितनी स्पष्ट, सटीक, दो टूक है , वह इतनी ही सच्ची और खरी भाषा की माँग भी करती है ।(26)

जवाहर सिंह जी के मतानुसार "इस उपन्यास की भाषा सच्ची और खरी है–नग्नता की हद तक सच्ची, मिर्च की तरह तीखी, चिडैता की तरह कडवी और बहुत हद तक फूहउपन की सीमा तक खरी भी । कुछ लोग इसे निगल पाते है, कुछ लोग मूँह में रखते ही थू–थू कर देते है।(27)

राहीजी की भाषापर आरोप लगाने से पहले "आधा गाँव" उपन्यास का भौगोलिक

वातावरण साथ ही पात्रों का सांस्कृतिक परिवेश देखना आवश्यक है । अगर उस जाति–प्रदेश के लोगों के बोलचाल की भाषा में ही अगर गालियाँ रही हो तो उनका चित्रण करना कोई बुरी बात नहीं है ।

राहीजी ने अपने उपन्यास "आधा गाँव" में यह दिखाया है कि गंगौली गाँव के लोग "भोजपुरी" बोलते हैं जो गाजीपुर क्षेत्र की बोलचाल की भाषा रही है । राहीजी के अनुसार अपने क्षेत्र की अपनी एक अलग भाषा होती है । हर एक प्रदेश के व्यक्तियों का जीवन अलग होता है । उनका खान–पान, रहन–सहन, साथ ही सांस्कृतिक विशेषताओं को उनकी भाषा के माध्यम से हम पहचान सकते हैं इस दृष्टि से राहीजी अपनी भाषा पर सफल हुए है ।

गंगौली गाँव के लोगों में "हिन्दी–उर्दू" समस्या दिखाई देती है । गंगौली में जो लोग हिंदी बोलते हैं उनका गंगौली के लोग मजाक उड़ाते हैं । वहाँ की युवतियाँ हिंदी पढ़ी –लिखी है जब की बूढी औंरतें हिंदी सिखना या लिखना धर्म के अनुसार पाप समझती हैं । इसके पीछे उन लोगों की परम्पराप्रियता और अज्ञान दिखाई देता है ।

इस उपन्यास में राहीजी ने भाषा और बोली को सामने रखा है । यहाँ अरबी ओर फारसी के साथ–साथ उर्दू और भोजपुरी शब्द भी आये हैं । गालियों के द्वारा पात्रों के आवेश का चित्रण किया है । उपन्यास की भाषा उपरिचित एवं क्लिष्ट होने के कारण पहली बार पढनेपर यह उपन्यास समझ में नहीं आता है पर दो या तीन बार पढ़नेपर हमें आनंद मिलता है । भाषा–सम्बन्धी विस्तृत विवेचन "आंचलिकता" अध्याय के उपशीर्षक स्थानीय बोली के अंतर्गत होने के कारण यहाँ केवल संकेत मात्र दिया गया है ।

शैली

आधुनिक उपन्यास की शैलियों मे आँचलिक शैली उल्लेखनीय मानी जाती है । इसमें जिस प्रदेश से कथा ली जाती है वहाँ के स्थानीय चित्रण को विशेष रूप से चित्रित किया जाता है। इस शैली का उद्‌भव प्रेमचन्दोत्तर युग में ही हुआ है । स्वातत्र्योत्तर युग के उपन्यासकारों ने इस

शैली के अंतर्गत अंचल में प्रचलित लोक–कथाओं, लोक परम्पराओं, रीति–रिवाजों, आचार–विचारों, भाषा और बोलियों आदि का समावेश किया है । फणीश्वरनाथ "रेणु", देवेन्द्र सत्यार्थी, रांगेय राघव, उदयशंकर भट्ट और राजेन्द्र अवस्थी आदि के नाम विशेष रूप से आंचलिक शैली का चित्रण करनेवालों में उल्लेखनीय हैं । प्राकृतिक विवरण भी आंचलिक शैली की विशिष्टता को बताने में सहाय्यक होते हैं । आंचलिक उपन्यासों में भावात्मक और विवरणात्मक शैली का प्रयोग अधिक किया जाता है ।

राहीजी ने "आधा गाँव" उपन्यास में व्यंग्य विनोद का प्रयोग किया है । उपन्यास में यौन सम्बन्धों का खुलकर वर्णन किया है । विशेषतः गुलाबीजान का तथा सफिस्वा का बछनिया को साथ लेकर भाग जाना, मौलवी बेदार का बछनिया के साथ शादी करने का निश्चय और अब्बास और सितारा के सम्बन्ध जो अंत में सितारा के परिवार को गंगौली छोडने में मजबूर करता है । इसतरह के रोचक प्रसंग उपन्यास में भरे हैं ।

उपन्यास में व्यंग्यशैली का प्रयोग भी दिखाई देता है । ये व्यंग्य सामान्य जीवन से उठाये होने के कारण अत्यन्त स्वाभाविक बने हैं । इसके अन्तर्गत मोहर्रम में बेहोश होने की होड, मजलिसों में स्त्रियों का रोना, उर्दू बोलने की शुरुआत, हकीमसाहब का रेल खरिदने का सपना देखना आदि में व्यंग्य है । घटनाओं के वर्णन में लेखक ने धैर्य से काम लिया है । कहीपर भी भावुकता नहीं है । उपन्यास कारने आत्मकथात्मक और वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया है ।

5 देशकाल अथवा वातावरण

देशकाल अथवा वातावरण का उपन्यास में विशेष महत्व होता है ऐतिहासिक उपन्यास में इसका ज्यादा महत्व है । उपन्यास में जिस कथा का चित्रण किया जाता है वह किसी देश अथवा वातावरण से सम्बन्धित होती है । आँचलिक उपन्यासों में वर्णित भौगोलिक और प्राकृतिक परिवेश से उस अंचल का पता चलता है यह कथानक में सहायता करता है ।

राहीजी के "आधा गाँव" उपन्यासद्वारा आँचलिकता को नई दिशा प्राप्त हुई है । इस

उपन्यास में सन् 1937 ई. से सन् 1952 ई. तक के 15 वर्षों की अवधि में होनेवाली घटनाओं का वर्णन किया गया है । इस काल में सन् 1937 ई. में. प्रांतीय विधानसभाओं के चुनाव हुए और प्रांतों में भारतीय सरकारों का प्रथम बार निर्माण हुआ । सन् 16 अगस्त्, 1946 ई. में मुस्लिम लीग की "डायरेक्ट एक्शन" की घोषणा हुई । इस काल में देशभर में हिंदू–मुस्लिम दंगे शुरू हो गये । सन् 1947 ई.में भारत का बंटवारा हुआ और पाकिस्तान का निर्माण हुआ । सन् 1950 ई. में भारत में नये संविधान की स्थापना हुई । सन् 1952 ई. के प्रारंभमेंसार्वजनीक चुनाव हुए । यह काल भारत पाकिस्तान के विभाजन का काल था । जिस समय हिंदू–मुस्लिम दंगे शुरु होकर चारों तरफ अशांति फैली हुई थी । मुस्लिमों के मन में हिंदू के प्रति और हिंदू के मन में मुस्लिमों के प्रति द्वेष, शक पैदा हो गया था।

इस उपन्यास में गाजीपुर के गंगौली नामक गाँव का वर्णन मिलता है । यह उत्तरप्रदेश के गाजीपुर जिले का मशहूर और बडा गाँव है, जिसमें हिन्दू और मुसलमान की अनेक जातियाँ रहती हैं । लेखक ने इस उपन्यास में केवल शीआ मुस्लिमों के जीवन को चित्रित किया है । इसीलिए लेखक ने इस उपन्यास को "आधा गाँव" कहा है । सार्वजनिक चुनाव होने के बाद भारत–पाकिस्तान विभाजन हो गया और ज्यादातर मुस्लिम पाकिस्तान चले गये । इससे मुस्लिमों की मानसिक स्थिति कुछ अलग बन गई । वे सोचने लगे अँग्रेजों के चले जाने के बाद यहाँ हिंन्दुओं का राज होगा । इससे मुस्लिमों के मन में हिन्दुओं के प्रति द्वेष भावना पैदा होकर दोनों जाति के लोग एक दूसरे को शक की दृष्टि से देखने लगे । साम्प्रदायिक दंगे फसाद का कारण वे एकदूसरे को मानते रहे । गंगौली में स्थित मुस्लिम भी हिन्दुओं से द्वेष कर उन्हें अपने से दूर रखने लगे । परन्तु कुछ स्थानोंपर लेखक ने इन दोनों में होनेवाली मित्रता को भी दर्शाया है । इस उपन्यास में मुस्लिम शीआ सम्प्रदाय का वर्णन होने के कारण मुस्लिम लोगों की रहन–सहन, त्यौहार, वेशभूषा आदि का वर्णन करके लेखक ने मुस्लिम वातावरण पैदा कर दिया है ।

राहीजी के "आधा गाँव" उपन्यास में चित्रित देश–काल वातावरण का विस्तृत विवेचन "आधा गाँव" उपन्यास में आँचलिकता" शीर्षक में होने के कारण दुहरावट टालने के हेतु यहाँ केवल संकेत रूप में उल्लेख किया गया है ।

6 उददेश्य

उद्देश्य को उपन्यास का प्रमुख तत्व माना जाता है । मन में किसी उद्देश्य की कल्पना लेकर ही उपन्यासकार अपनी रचना का निर्माण करता है । उद्देश्य में उपन्यासकार का दृष्टिकोन और जीवनदर्शन होता है । आँचलिक उपन्यासों का उद्देश्य अंचल के समग्र जीवन को अभिव्यक्त करना होता है । उद्देश्य तभी सफल होता है जब कृति में आत्मीयता हो, पढने पर पाठकों को वह कृति अपनी लगे ।

राहीजी ने अपने उपन्यास "आधा गाँव" में यथार्थता को वाणी दी है । इस उपन्यास में उन्होने स्वतंत्रताप्राप्ति के पूर्व और पश्चात् 15 वर्षों का लेखाजोखा प्रस्तुत किया है । उन्होंने राजनीति के साथ सामाजिक समस्याओं को भी दर्शाया है । परन्तु उनका उद्देश्य मुस्लिम शीआ सम्प्रदाय का वर्णन प्रस्तुत करना रहा है । राहीजी ने इस उपन्यास में शीआ समुदाय के सभी अंगों का वर्णन कर उनकी रहन सहन, वेशभूषा, खान–पान, राजनीतिक स्थीति से निर्माण मानसिकस्थिति आदि सभी का चित्रण कर शीआओं का जन–जीवन प्रस्तुत किया है । लेखक स्वयं मुस्लिम होने के कारण यह वर्णन सच्चा जान पडता है शायद पहली बार ही राहीजी के द्वारा यह वर्णन लोगों के सामने प्रस्तुत हुआ है । इस उपन्यासद्वारा लेखक ने हिन्दू–मुस्लिम सम्बन्धों पर भी प्रकाश डाला है । इससे पहले मुस्लिम जन–जीवन का वर्णन उपन्यासों में आया नहीं ऐसा नहीं है लेकिन लेखक ने जिस आत्मीयता से यह चित्रण किया है वह सचमूच यथार्थ जान पडता है । इसीलिए "आधा गाँव" उपन्यास लेखक की एक विशिष्ट कृति होने के साथ–साथ हिन्दी साहित्य का असाधारण और महत्वपूर्ण उपन्यास माना जाता है । इस उपन्यास में सभी विषेशताओं को पाया जाता हैं जो सफल उपन्यास के लिए आवश्यक है । डॉ. राहीजी अपने उद्देश्य में सफल हो गए है ।
उनके "आधा गाँव" उपन्यास में आत्मीयता है साथ ही यह वर्णन निष्पक्ष भावसे किया गया है जिससे पाठकों को वह कृति अपने ही जीवन की लगती है ।

7. शीर्षक

शीर्षक को उपन्यास में अन्य तत्वों की तरह ही महत्वपूर्ण माना जाता है । शीर्षक हमेशा चुटकिला, छोटासा, अर्थपूर्ण होना आवश्यक है जिससे पाठकों के दिमाग पर गहरी छाप छोड जाती है । शीर्षक के आधारपर हम उस उपन्यास का अंदाजा लगा सकते हैं । जटिल और बडे शीर्षक के कारण पाठकों को उपन्यास पढने की इच्छा नहीं होती ।

राही जी का "आधा गाँव" यह शीर्षक छोटासा चुटकिला और अर्थपूर्ण है । यह शीर्षक पढते ही लोगों को यह उपन्यास पढने की इच्छा निर्माण होती है । राहीजी ने गाजीपुर जिले के गंगौली गाँव के आधे भाग में रहनेवाले केवल शीआ मुस्लिमों का ही वर्णन किया है जिससे इस उपन्यास को "आधा गाँव" कहना सार्थक सही और योग्य लगता है । इस गाँव में अनेक जातियाँ निवास करती हैं पर यहाँ के सिर्फ शीआ मुस्लिमों के जन-जीवन को प्रस्तुत करना लेखक का उद्देश्य रहा है । आवश्यकतानुसार अन्य जातियों का उल्लेखमात्र किया गया है । "आधा गाँव" यह शीर्षक उत्सुकता जगानेवाला, संक्षिप्त नवीन और मौलिक, इस उपन्यास के कथानक से संबधित कलात्मक, सार्थक, प्रभावशाली है ।

संदर्भ

अ.क्र.	उपन्यासकार	उपन्यास का नाम	पृ.क्र.
1.	सुषमा प्रियदर्शिनी	हिन्दी उपन्यास	78
2.	राही मासूम रजा	आधा गाँव	11
3.	– वही –	– वही –	11
4.	– वही –	– वही –	11–12
5.	– वही –	– वही –	12
6.	रामदरश मिश्र और ज्ञानचन्द गुप्त	हिन्दी के आँचलिक उपन्यास	11
7.	सुषमा प्रियदर्शिनी	हिन्दी उपन्यास	79–80
8.	राही मासूम रजा	आधा गाँव	83
9.	– वही –	– वही –	65
10.	– वही –	– वही –	175
11.	– वही –	– वही –	301
12.	– वही –	– वही –	281
13.	– वही –	– वही –	187
14.	– वही –	– वही –	293
15.	– वही –	– वही –	77
16.	– वही –	– वही –	361
17.	– वही –	– वही –	22
18.	– वही –	– वही –	35
19.	– वही –	– वही –	152–53
20.	– वही –	– वही –	179–80
21.	– वही –	– वही –	281–82
22.	– वही –	– वही –	88

अ.क्र.	उपन्यासकार	उपन्यास का नाम	पृ.क्र.
23.	राही मासूम रजा	आधा गाँव	113
24.	डॉ.रामदरश मिश्र और ज्ञानचंद गुप्त	हिन्दी के आँचलिक उपन्यास	14
25.	ज्ञानचंद गुप्त	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास और ग्रामचेतना	279
26.	राही मासूम रजा	आँधा गाव, प्रकाशकीय वक्तव्य	8
27.	जवाहर सिंह	हिंदी के आंचलिक उपन्यासों की शिल्प-विधि	231